॥ श्री सद्गुरु प्रसन्न ॥

राष्ट्रविलास

लहरी भजनावली

* हिन्दी भजनावली *

:: लेखक ::

श्री संत जयरामदास महाराज

किंमत दहा रुपये

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

द्वारा लिखित

राष्ट्र विलास

हिन्दी भजनावली

प्रकाशन तिथी

७ डिसम्बर १९७३

किमत दहा रुपये

• प्रकाशक –

संत जैरामदास

• प्रबंधक –

लहरी आश्रम

मु. पो. – कामठा

तहसील – गोंदिया

जिला – भंडारा

प्रथम आवृत्ति १००० + २५०

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

• पुस्तक मिलने का पता –

लहरी आश्रम कामठा

पो कामठा

तह. - गोंदिया, जिला - भंडारा

• मुद्रक –

शिवकृपा प्रिन्टींग प्रेस

सुंदरानी मार्केट, स्टेशन रोड,

भंडारा - ४४१ ९०४

संदेश

प्यारे भाईयों -

यह हमारा वहुत बडा सौभाग्य है कि, हमें मानव जन्म मिला है। संसार की संपूर्ण जीव सृष्टि में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। क्यों ? क्या इसलिए कि वह अच्छा खाता, पीता, जीता और मौज मजा लूटता है ? या क्या इसलिए कि वह अपने आनंद और भोग की वस्तुएँ अपनी इच्छानुसार प्राप्त कर लेता है? नही, मनुष्य को इसके लिए श्रेष्ठ नही माना गया है। जीने के लिए तो पशु, पक्षी, कीडे, मकोडे सभी जी लेते है वे भी मृत्युपर्यंत यही सब करते रहते है। उनमें भी थोडे बहुत प्रमाण में बुद्धि रहती है। किन्तु मनुष्य इसलिए सर्वश्रेष्ठ है कि उनमें विवेक है। विवेक शून्य मनुष्य के और पशु के जीवन में वहुत अधिक अंतर नही माना जा सकता।

तब प्रश्न यह उठता है कि विवेक क्या है और उसकी प्राप्ति कैसे होती है ? प्यारे मित्रों, विवेक पवित्र आत्मा से उठने वाली वह चेतना है जो सत्य, असत्य का, पाप पुण्य का भेद बताकर हमें सदैव ही सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करती है। यही चेतना आगे चलकर हमें ईश्वर की ओर ले जाती है।

किन्तु यह सब प्रयत्न से ही संभव हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले हमें अपने मन को निर्मल बनाना होगा। मनुष्य की सबसे बडी शक्ति उसमें निहित विवेक है और उसकी सबसे बडी कमजोरी उसका मन है। जैसे जैसे हमारा मन काम

क्रोध, लोभ, अहंकार को जीतते जाएगा वैसे वैसे उसमे विवेक का संचार होने लगेगा और तब वह स्थिति आ जावेगी जहाँ मन की सारी कमजोरी दूर होकर मन स्थिर हो जाता है और तब विवेक ज्योति प्रज्वलित हो जाती है, जिसके प्रकाश में मनुष्य का सारा भ्रम दूर होकर ईश्वर के प्रति उसका विश्वास दृढ हो जाता है और तब जीवन की कठीन परिस्थिति में भी उसका मन अडिग बना रहकर वह निर्मल मन से अपने कर्म करते चला जाता है। ऐसा मनुष्य स्वयं तो सदैव आनंद पाता ही है अपने साथ में रहने वालों को भी आनंद बाँट सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक है कि हम कोई भी काम करे, चाहे अपने प्रपंच का ही क्यों न हो, हमेशा उसे अपनी आत्मा की गवाही देकर, अपने विवेक से उसे परखते रहे। सदैव ही ऐसा कार्य करे जिससे दूसरों को कष्ट न पहुँचे बार बार मन को समझाकर उस पर संयम रखें। जब हम स्वयं सुधर सकेंगे तभी समाज को सुधार सकेंगे, तभी हमारा समाज और देश उन्नती कर सकेगा। खाली बैठकर केवल बडी बडी बाते करने से कुछ नही होगा। मित्रों, इन बातोंपर ध्यान दो और समझो तभी भलाई हो सकती है वरना नही।

जैरामदास.

सूची

भजन क्र.		पृष्ठ क्र.
१	एक जीवन सहारा है	१
२	ज्ञानी रे ज्ञानी तेरा ढंग	२
३	ये गरीबों की जिंदगी है	२
४	तेरी चालाकी कब तक चलेगी	३
५	सच झूठ का साक्षी है वो	४
६	जाओ रे तुम हरि दर्शन को जावो	४
७	पर जीवों पर सदा प्रेम रखना	५
८	घर आयो आज जैराम पाहुना	५
९	सुन रे कन्हैया राधा के रमैया	६
१०	प्रीत लगी तेरी गजानन साईं	७
११	किसी जीवों के काम मे रे	८
१२	कहना तो आसान है	८
१३	देश मेरा हिंदुस्थान	९
१४	देश धर्म के काम जो आवे	९
१५	छोड गये है बापूजी	१०
१६	कर्म तेरे जब उज्वल होंगे	११
१७	इंसाफ का मंदिर है	११
१८	मेरे दिल में लगी है	१२
१९	ये भारत भू का छोरा	१३
२०	आज छोडो है मानवने	१४
२१	इन स्वार्थी लोगोंसे हुआ	१५
२२	प्रेमी मेरा वो सच्चा है	१५
२३	जिसको जिस पर हैं श्रद्धा	१६
२४	पाया रे मैंने राम रतन का	१६
२५	मुझे ध्यान लगा	१७
२६	आज जग में जहां वहां	१७
२७	स्वाभिमान के बल पर	१८
२८	धन पुत्र का गर्व जिसे हो	१९
२९	कर्म भूमि में आये तो	१९
३०	हरी के भजन बिना किसी ने	२०
३१	जो जाने दिल की बात	२१
३२	बापू के वचनों को निभाने	२१
३३	दुनिया देखो गन्दी फंदी	२२
३४	तेरी नेकी बदी	२३
३५	मैं जोगी जोगन	२३
३६	अमर हो गया जो नर	२४
३७	हमारे बोल की किमत	२४
३८	तुम हमसे करते गद्दारी	२५
३९	अब काहे को बकवास	२५
४०	दो दिन की जिंदगी फिर	२६
४१	ऊंचे भाव को दिल में रखकर	२७
४२	तेरी रहेगी जग में शान	२८
४३	हम आये तेरे दर पे	२९
४४	करे भगवान पूरा उसका	२९
४५	जो बुरे राहों पर चलता है	३०
४६	ओ ऽऽ दुनिया के बनाने वाले	३१
४७	अरे बुरी व्यसन में फंसी है	३२
४८	इस देशकी जिम्मेदारी	३३
४९	समाज सुखी देश सुखी	३३
५०	ये खिसकती उमर तेरी	३४
५१	मेरे भारत के किसान	३५
५२	सच्चे सेवक कहलाते	३५
५३	बिगडे कर्म के वो ना चले	३६
५४	ग्राम येही मंदिर मेरा	३८
५५	मेरा प्यार किसान मेरा	३८
५६	गरीबों के अश्रु से भर रही	३९

भजन क्र.		पृष्ठ क्र.	भजन क्र.		पृष्ठ क्र.
५७	जींसका पद उसको ही सोहे	४०	८४	हम तो बिक गये	६०
५८	आनंद तो उसको है मिलता	४१	८५	जब बडो का है बुरा हाल	६०
५९	भक्तों के रखवाले अब तु	४२	८६	कोई चाहे तेरा कल्याण हो	६१
६०	नेता बिगडा है गांव में	४२	८७	सच्चाई को तु रख इन्सान	६२
६१	मन के भाव उज्वल	४३	८८	सुनरे छलिया	६३
६२	कितना प्यारा मेरा वतन	४३	८९	इस देश में रहने वालों	६४
६३	घुली धुली जा रही	४४	९०	मेरा प्यारा वतन	६५
६४	कहता है तू मेरी खेती	४५	९१	आईये प्रभु मन मन्दिर में	६६
६५	हर वक्त तुम्हारे लिये	४५	९२	जब आई काम करन की बात	६६
६६	मानो कहना मेरा भाईयों	४६	९३	सच्चे मन को जँचे	६७
६७	गांव में घुमे निठल्ला	४७	९४	तेरी यह माया	६८
६८	सुनो जन की, करो मनकी	४७	९५	मुझसे बोल कान्हा	६९
६९	व्रजपाल दयालू श्याम मुझे	४८	९६	सत्य है जिसको मानो	७२
७०	मोहे जगसे है राम प्यारा	४९	९७	करना है तो करजा	७०
७१	अब काहे को कलबल करते	५०	९८	सच्ची सेवा करे जो	७१
७२	मेरे दिल की धडकन समझ ना पाया	५०	९९	जब तू मातृ भूमिका है प्यारा	७२
			१००	आखिर तुम्हारे ये लगते है	७२
७३	मत भूल रे ज्ञान ले	५१	१०१	मै तो अपनी गाडी चलाऊँ	७३
७४	अब वक्त नहीं है मेरे पास	५२	१०२	जन्म मरण से डरना है	७४
७५	जानूं ना मै पूजा अर्चा	५३	१०३	अगर तुझे प्रेम करना है	७४
७६	कैसा अकडते	५३	१०४	चलो रे मेरी सुरती	७५
७७	बातों का बनाना छोड दे	५४	१०५	सदा भवानी दाहिना	७६
७८	पहिले अपने मनको सुधारे	५५	१०६	भारत की आजादी को	७७
७९	मन करे सदा शैतानी	५६	१०७	सत्य छोडे झूठ पकडे	७८
८०	ओ कमली वाले मुझे	५६	१०८	कदर होती है दुनियामे रे	७९
८१	गरीबी से गुजरा प्राणी	५७	१०९	मानव की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा	८०
८२	मुझमें ऐसी आदत बुरी	५८			
८३	कान्हा हमार	५९	११०	स्वाभिमान से जो जीता है	८१

वंदना

(चाल– तेरे द्वार खडा एक जोगी)

मेरा ताल है सबसे निराला २
मै ही गांवूं मै ही बोलू, ऐसा हूं अलबेला ।। धृ ।।
ना किसीसे दोस्ती मेरी, ना हूँ मै किसीका बैरी
अपने में मतवाला ऽ ऽ २
नही किसीसे लेना देना, फुकट नही किसीसे खाना
छूटा माया झमेला ऽ ऽ २
अपने बलपर करुं गूजारा, पीकर ब्रम्हप्याला ।। १ ।।
समाधान पावू सत्संगमें भूल जावू उनके गुणमें
सुध ना रहे इस तनकी ऽ ऽ २
ब्रम्ह जगतकी देखूं झाँकी, सारी दुनिया लगे फीकी
लगी लगन हरिहर की ऽ ऽ २
मै ही गुरु मै ही चेला, ऐसा हूं मै भोला ।। २ ।।
मेरे ताल को कोई न जाने, जाने तो टूटे आना-जाना
मोक्ष का मिले ठिकाना ऽ ऽ २
कर्ता धर्ता वोही बना, सभी में है वो परिपूर्ण
हो गया वो मस्ताना ऽ ऽ २
पृथ्वी को वो गेंद बनाकर, खेले खेल निराला ।। ३ ।।
आत्म तत्वको मैने पाया, विश्वको घर बनाया
तिर्थं मनमे किया ऽ ऽ २
सब ठिकाना एकही पाया, कल्प विकल्प सब मिटाया
नैनों मे बसगया ऽ ऽ २
जैरामदास कहे गुरुकृपा, निर्गुण खेल खेला ।। ४ ।।

श्री संत लहरीबाबा उर्फ जैरामदास महाराज, कामठा.

आश्रम :- कामठा, जि. भंडारा. जन्म तारीख ७/१२/१९२२

॥ श्री लहरी ॥

भजन क्र १ तर्ज– एक प्यार का नगमा है . .

एक जीवन सहारा है, हरिनाम ये प्यारा है।
उसके बिना कुछ भी नही,
ये दो पल की कहानी है ॥ धृ ॥

दो राहे है चलने की, प्रभु इसका सहारा है
सच झूठ निरखता है, फल वैसा ही देता है।
जिस ओर जो जाता है. वैसा ही वो पाता है ॥१॥

लेना और देना है. मंजिल को पाना है,
सुख दुख ये साथी है, इस तन को ही सहना है।
चौरासी के फेरे से छुटकारा करना है ॥ २ ॥

नश्वर मे ही ईश्वर की, वो झांकी को पाना है।
भक्ति के तरंगों मे, हरदम हमे बहना है।

जिसमे कोई सार मिले, उस पथ पे ही चलना है॥३॥
माया से गुजर करके, परमार्थ करना है।
आई हुई आँधी से. हरदम टकराना है।
जीवन सफल बनाना है, ये नाता निभाना है ॥ ४ ॥

'जैराम' ना भूल होवे, जब तन से प्राण जावे।
बस नाम ही दिल मे रहे, इतना ही तो मांगना है।
धन दौलत ना मांगू, तेरे नाम पे मरना है। ५ ॥
उसके बिना — — — — —

भजन क्र. २ तर्ज– पानी रे पानी तेरा रंग

ज्ञानी रे ज्ञानी तेरा ढंग कैसा
बिन पेंदे के लोटे जैसा ॥ धृ ॥
इस दुनियां में ऐसे भी तो ठग ये पाये जाते ।
मीठी मीठी बात बनाकर लोगों को है फसाते ।
अपना उल्लू सीधा करने, डाले ये फांसा । १ ॥
पाप कर्म को तनिक न जाने, अपनी शखी बखानें
कर्म करे ओ झूठ मूठ के स्वारथ को बनाने ।
ऐसे लोगों के ही कारण हुई दुर्दशा ॥ २ ॥
फूट की दरारे पाई जाती, धर्म की हानि होती ।
ईर्ष्या की य लहरे देखो, चहु ओर मंडराती ।
फैला रखा है उन्होंने ही आज ये तमाशा ॥ ३ ॥
ऐसे स्वार्थी लोगोंसे तुम, हरदम ही टकराओं ।
समाज सारा बिगड रहा है इनसे आज बचाओ ।
ध्यान देने पर सुधरेगी, देश की ये दशा ॥ ४ ॥
जैरामदास कहे इन्हे हीं सच्चा मार्ग दिखाओ ।
तभी होगी देश की उन्नति इनको सबक सिखाओ ।
भूलो ना तुम कभी दिल से सत्य और अहिंसा ॥ ५ ॥

भजन क्र ३ तर्ज– इक प्यार का नगमा है

ये गरीबों की जिंदगी है आटा दाल की तंगी है ।
रात दिन तरस रहे प्रभु कैसी ममता है ॥ धृ ॥
रोरो करके बिताये जीवन, मिले कपडा न इनके बदन
रोते है बच्चे इनके, दानें दाने इक इक कन ।
मोहताज होकर फिरते, ठुकराते सब दर पे ॥ १ ॥

कोई करते न इन पर रहम, मसले जाते है ये हरदम ।
आह का न समझे मरम छूट रहा है इनका दम ।
निरे सांस मे इनका जीवन, चहुँ ओर घूम रहा है मन ॥२॥
ललचाये देख रहे किसी खाने वाले को ।
आये न दया किसी को, तुच्छ समझे इनको ।
ऐसा मानव, मानव से, मानव का प्रेम नही ॥ ३ ॥
द्वेष इर्ष्या बढ रही है, आदर के भाव नहीं है ।
दुसरे को दबाने में आनंद मनाते है ।
ऐसी गलत राहों पर, चल रहा है मानव ये ॥ ४ ॥
कहता है जैरामदास, इसने होगा धर्म का नाश ।
नही होगा देश विकास, मांगेंग सब जीव त्रास ।
मानलो मेरी बात, सत्य पे रखो विश्वास ।
निभालो बंधु प्रेम, इसमे ही भलाई है ॥ ५ ॥

भजन क्र. ४ तर्ज– पग घुंगरु बांध मिरा नाची रे

तेरी चालाकी कब तक चलेगी ।
सच झूट को देख रहा भगवान ।
कैसा भूल रहा तु बाँवरे अंधा बनकर फिरे मारे मारे ।
भूल अपनी सुधारले रे ॥ १ ॥
चाँद ना बदले, सूरज न बदले, बदले न ये आसमान ।
बदली तेरी इसानियत रे ॥ २ ॥
मन की ये सुनता है हरदम, ठोकर खाये कदम कदम पर ।
गलती को न देख पाये रे ॥ ३ ॥
ठिक है सब कुछ तेरा, सत्कर्मो को तू है भूला ।
कैसे होवे भाग्य उजले ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे प्रभु महिमा समझे बिन आवे न कामा।
प्रभु सत्ता बिन, हिलता न पत्ता ॥ ५ ॥

भजन क्र. ५ तर्ज– इंसाफ का मंदिर है ये भगवान

सच झूठ का साक्षी है वो कण कण में समाया।
क्यों व्यर्थ तू भरमाया, जीवन बेकार खोया ॥धृ॥

तू साफ करले अपने मन को ज्ञान साबुन से।
है पास तेरे क्यों भटकता, पुछले दिलसे ॥ १ ॥

जब तुझमें ही दुर्गुण भरे तब कैसी परख होय।
है पास मृग कस्तुरी भ्रम में ही उमर खोय ॥ २ ॥

ऐंसी ही तेरी बीती उमर मै तू पन में :
इसमे नही इहलोक सधा नही सधा पर लोक। ३ ॥

जब तू भलाई चाहता, धर संतो का सत्संग।
'जैराम' कहे जीवन सुधरने, में लगे न कोई देर ॥४॥

भजन क्र. ६ तर्ज– पायोरी मैने राम रतन धन पायों

जाओरी तुम हरि दर्शन को जाओ ॥धृ॥
उसके बिना कही सुख न मिले।
रतन अमोलिक पाई ॥ १ ॥ पायो

सब धन से प्यारो राम धन है।
खरचत ना कम होई ॥ २ ॥ पायो

कितना भी कोई भाग्य हीन हो।
नाम रटत तर जाई ॥ ३ ॥ जायो

जैरामदास कहे, नाम की महिमा।
राम से बढ कर होई ॥ ४ ॥
आयो

भजन क्र. ७ तर्ज– परदेसियो से न अंखिया मिलाना

पर जीवों पर सदा प्रेम रखना
उनके ही खांतिर तन मन लुटाना ।।धृ।।

सच्चा है जो नर पर दु:ख जाने
सुख दु:ख को ओ एकसा माने
दुखियों के लिए अपना शरीर गंवाना ।। १ ।।

बदला न लेवे कर्तव्य समझकर
रखता ना ओ कभी काल का भी डर
मानव धर्म उसीने पहचाना ।। २ ।।

अपना पराया स्वप्न न देखा
सभी को माने एक सरीखा
उसी ने ही जग में संत कहलाना ।। ३ ।।

मान बडाई कभी ना छुवे
लीनता से अपना जीवन बितावे
धर्म निती से सदा चलते रहना ।। ४ ।।

जैंराम कहे गुण हो जिसमे
अमर नाम रखा उसने जगत में
उसको प्यारा सपूत समझना ।। ५ ।।

भजन क्र ८ तर्ज– जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया

घर आयो आज जैंराम पाहुना ।
आनन्द गगन में समावेना ऽ ऽ ।।धृ।।
भूल गई ऽ ऽ ऽ

भूल गई मैं सब काम धंदा
नैंनों में बस गये मेरे गोविन्दा
हुई दिवानी, नांचू मतवाली,
लाज शरम मोहे रहीना ।। १ ।।

फिक्र चिन्ता सब छूट गई
चाहे मुझे कुछ भी कहे कोई ।
मानो ना मानो मेरा कहना ।। २ ।।

'जैराम' दास लागी [illegible]
उसके बिना जिया, पल भी न लागे
रैंन सुहानी लागे ओ सुनी ऽ ऽ
मृगजल से न जावे तृष्णा ।। ३ ।।

भजन क्र. ९ तर्ज - सुनरी पवन, पवन पुरवैंया

सुन रे कन्हैया, राधा के रमैंय्या,
नैया अडी है मजधार मेरी आके
अब तू बन जा खिवैंया ।।धृ।।

तेरे बिना कोई नही अब मेरा,
आके प्रभु नाव को दे किनारा
फसी है नैया, विनती सुन सावरिया
भूले का एक तू सहारा प्रभु मेरा
आके बन जा साथिया ।। १ ।।

तेरा मेरा साथ कई जन्मों का
भुल से ये आया मौका रोने का,
अब ना ठुकरा, माफ कर दे मुझको
त्रस्त हो गया हुँ और चल रही है जोरसे
माया की आँधिया ।। २ ।।

धोका ही होता है, जहाँ जाऊ मैं
शान्ति दो जिससे ये चैन पाऊँ मैं
आज्ञा बिन तेरे, पत्ता भी नही हिलता,
तेरी कृपा हो जिसपे, पापी भी तर जाय,
ऐंसी तेरी है माया ।। ३ ।।

क्यों सता रहे हो प्रभु अब हमे
हो रही जग मे हँसी रहम ना तुम्हे
रुठे क्यों प्रभु क्या हमने है बिगाडा
माफ करो गल्तियाँ, जैराम को दो सहारा
शरण तेरे मैं आया ।। ४ ।।

भजन क्र १० तर्ज- बालम आन बसे मन मे

प्रीत लगी तेरी गजानन साई, तनकी ये सुधबुध भुलाई ।।धृ।।
जिधर में देखू उधर तू दिखता,
तेरे बिन ना कोई सुहाता, ऐसी तेरी मोहनी मुरत
मेरे दिलको भाई, प्रीत लगी ।। १ ।।
काम काज मे मन ना लागे, क्षण क्षण चित तोरे ओर भागे
खान पान ये ना सुहावे, ऐसी मेरी गति भई ।। २ ।।
रात दिन ये जगे, मेरे नैंना, चार अवस्था देखू मैं सपना
झांझ मजीरा कभी सुन पावू, बंसी नाद सुनाई ।।३।।
शान्ति ना मुझे कही मिल पाई, तिरथ यात्रा सब मैंने की
धुन लगी तेरे नामकी, देहकी फिकर ना रही ।। ४ ।।
तन मन धन निछावर किया, तुझको पाते शरण मैं आया
जैंराम कहे विनती मेरी, संग देवो रघुराई ।। ५ ।।

भजन क्र. ११

किसी जीवों के काम मे रे, तुम देवोगे नाहक दखल
कभी न होगा काम तुम्हारा, इस दुनिया मे पुरा सफल । धृ ।
जीव जीवसे बैंर तू करता, करता न इसका विचार,
धन माया के गर्व मे रहकर, करता है तू व्यभिचार,
कबतक रे चलेगा तेरा, छलकपट का ऐसा बल । १ ।
स्वार्थ हित मे डूबा तू रहता, हरने को दूजेका धन,
ऐंसा है रे तू निर्दयी, दुखाते रहता दूसरोंके मन,
आवे न तेरे दिल मे रहम, ऐसी है रे तेरी अकल । २ ।
दया धर्म तो कुछ ना जाने, अनितिसें करे व्यवहार,
मांस मदिरा सट्टा जुवा, इसका बनता है रे सरदार,
चुगली, गप्पों पर निंदा में, जींवन अपना कर गोल । ३ ।
जेंरामदास कहे रे भाई, तुझको नहीं है किसीं की शरम,
तुझ से तो अच्छे पशु बिचारे, वो करते है अच्छे काम,
शैंतान सरींखा घूमता फिरता, रोना पडेगा अंतकाल
कठिन होगा । ४ ।

भजन क्र. १२ चाल– हरन को भूमि का भार

कहना तो आसान है, पर करने को लगती देर ।धृ।
लेने को तो हाथी लेना, कठिन है पालन करना
बिना बिचारे जो करता है, भोगे दुख का फेर । १ ।
पढकर आत्मज्ञानी कहावे, आत्म तत्व नही जाने,
कागज मे वो राम को देखे, मिला न अंतर सार । २ ।
निसंयम यम बिन कुछ ना होवे, बिना करनी कुछ न पावे
जेंराम कहे इन बातोंका, दिल में कर लो बिचार । ३ ।

भजन क्र. १३ अर्ज– गंगा मेरी मां का नाम

देश मेरा हिंदुस्थान, अहिंसा को दे स्थान
नीति धर्म का कट्टर समझो, अध्यात्मकी है ये खान ।।धृ।।

मर्यादा का पालन हारा, समदृष्टि का तारा,
चिढ इसको बुरे नीतिकी, दया शांति का प्यारा ।
समावेश है ऽ ऽ सब धर्मोका, माने सबको समान । १।।

अपनें बल पर जिंदा रहना, मुफ्त न किसी का खाना,
रुखा सुखा खाकर भी, हरदम मुस्काते रहना
सत्य के लिए ऽ ऽ प्राण गवाये, येही इसकी शान ।।२।।

अपने हक का फर्ज निभाना, ये ही इसका बाना
इसपर जिसने जुल्म किया, हरदम उससे टकराना
स्वाभिमानसे ऽऽ बितावे जीवन, विश्वास हरि के नाम ।।३।।

साधु संत का आश्रय लेकर, यहाँ की जनता चलती
सच्चा भरोसा ईश्वर का ये, अपने हृदय में रखती
गीता रामायण ऽ ऽ आरती पूजा, दैंनिक य जीवन ।।४।।

हिरे, मोती और जवाहर, इसका न इनको गुमान,
मातृभूमिके रक्षक को ही, मिलता यहाँ मान,
सच्चा खजाना ऽ ऽ सती संत है, कहता है जैराम ।।५।।

भजन क्र. १४ तर्ज– वृंदावन का कृष्ण कन्हैया

देश धर्म के काम जो आवे सच्चा वो ही कहलाता
उसके ही बलपर चलती है, आज देश की मानवता ।।धृ।।

उसके ही कर्मो मे छुपी है, मातृभूमिकी सब ममता,
सत्य करुणा समदृष्टि से लाये सब में वो समता
सबके हित में तन को लगाये, सुख दुख का वो ही कर्ता ।।१।।

पर दुख को वो अपना समझे, पर पीर हरने को तत्पर
कितनी भी आपत्ती आये, धैर्य न छोड वो क्षणभर
ऐसे दृढ सिद्धांत है जिसके, मरकर भी जीवित रहता । २ ।

वनके नेता संगठन का एकता सब में वो लाये ।
बांध के सबको प्रेम धागे मे, सब में प्रिति जगाये,
तनिक न किसीसे भेदभाव है, दूर करे वो अज्ञानता ।।३।।

जैरामदास कहे ऐसे गुण, जिस प्राणी के दिल मे हो
वोही नर आकर इस जग मे, सच्चा सपूत कहाये वो
इसे भुलकर जीनेवाला जीवित भी मृत ही रहता ।।४।।

भजन क्र. १५ तर्ज– तुमपे बडी जिम्मेदारी . देख रही दुनिया सारी

छोड गये है बापूजी, हमपे बडी जिम्मेदारी.
फर्ज निभानेको तनमन से, दिलसे करो तुम तैयारी ।।धृ।

देखो कही ये भूल न होवे, प्रण को उनके निभाने को
करना है अब देश कार्य को, सब मिल उन्नति लाने को
त्यागो आलस को वीरों, मातृभूमि दे रही ललकारा ।।१।।

कर दो तन मन धन को निछावर, अपनी भलाई चाहते हो
कभी न मिलेगा ऐसा मौका, देश धर्म को चाहने को
अमर रहेगा नाम तुम्हारा, मरकर भी किर्ति तुम्हारी ।।२।।

भेज दो सब को ऐसा संदेशा, कोई न वचनों को टाले
सत्य अहिंसा की क्रांति से, उज्वल जीवन को कर ले
कंधे से कंध को जोडकर, भूल जावो गरीबी अमीरी ।३।

स्वावलंबी जीवन बनाये, राष्ट्र धर्म निभाने को
एकता के नीवपर चले हम, आजादी को टिकाने को
समझाये जंराम इसमे, भलाई हमरी तुमरी । ४ ॥

भजन क्र. १६ चाल– चांदी की दिवार न तोडी

कर्म तेरे जब उज्वल होंगे, प्यार से पुकारेगी जनता
तेरे लिए नर मिट जायेंगे, सबका भला तू कर सकता ॥धृः

सबकी भलाई मेरी भलाई, भावना ऐसी मन मे हो
देखे जब दुजे दुःख को तू, रोना मुझे भी आता हो
तेरे लिए फिर इस दुनिया मे कही न पडेगी कमतरता ।१।

जब तू चन्दन जैसा घीसे सारा जगत तेरे पिछे
कितनी भीं तुझपर आये मुसीबत, हल होगीं हसते हसते
प्रभुजी तेरे साथी बनकर, देते रहेंगे दिलासा ॥ २ ॥

सच्चा प्रेम तेरा जगा हो, मेरा कुछ भी यहाँ नही
सबपर सत्ता भगवान कीं है ये धन दौलत सब भाई
ऐसा तेरा जब व्यवहार होगा, तभीं टिकेगी मानवता ।३।

जैरामदास कहे सुन भाई, इन वचनोपर ध्यान तू दे
प्रेम दे और प्रेम लेते जा, भेद भाव मन से भगा दे
अमर रहेगी किर्ति तेरी, ऐसे काम तू करते जा ॥४॥

भजन क्र १७ चाल- इंसाफ का मंदिर है ये भगवान का घर है

इंसाफ का मंदिर है और न्याय का दरबार
परख करके चलते जा, होगा तेरा उद्धार ॥धृ॥

दुर्गुण को तू हटाले, नव जीवन बनाने को
इसमे तेरी ऽ ऽ नैय्या होगी, पार मजधार ॥१॥
होवे जहां भीं कमतरता, पूर्ति उसकी कर
उज्वल बना ऽ ऽ ले, अपना मन फिर रहे न काल डर ॥२॥
अब प्रेम करना सीख ले तू, अपनी आत्मासे
कोई न रहे ऽ ऽ दुश्मन तेरा, सपूत कहे नर ॥३॥
परिवार सम सब प्राणीको, घर विश्व मान ले
घर संतोका ऽ ऽ सत्सग, कर ले जीवन अमर ॥४॥
जैराम कहे जीवदान, देने का, स्थान है
आश्रम है ये ऽ ऽ समझे जो नर, उसको मिलेहीं फल ॥५॥

भजन क्र १८ (जैराम बाबा के सच्चे सिद्धांत)
चाल– कदर न जाने ना मेरा बालम, बेदर्दी

मेरे दिल मे लगीं है, ऐसी लगन
सुखमय हो सभीं के जीवन ऽ ऽ ॥धृ॥
देख न पाऊ किसी को दुखी
तडफ है ऽ ऽ में, संसार सबका होवे सुखी ॥१॥
अन्न, वस्त्र मिले सबको
पिसा न जावे कोई किसी के जुल्मोंसे वो ॥२॥
न्याय, नीति के राहोंपे चले
नाता निभाये ऽ ऽ प्रेमभाव का वो सबसे ॥३।
किसी भाईपर आये मुसीबत ऽ ऽ
तत्पर रहे ओ ऽ ऽ मदत करने ।४।
अन्याय का, का करे प्रतिकार ऽ ऽ
न्यायी का ओ ऽ ऽ करे सत्कार ।५॥

जैरामदास कहे, यही मेरी आस
कर जोरे ऽ ऽ विनती करुं प्रभू कर विकास

भजन क्र. १९ तर्ज – मेरा नाम है चमेली

ये भारत भूका छोरा, बापू का काम अधूरा
पूरा करना फर्ज हमारा, तन मन धन सें
ये भूल ना होने पाये, आजादी को टिकाये
त्यागो आलस को, और लगों तुम काम से ।।धृ।।

अपने गांव को स्वर्ग बनाओ, भेदभाव हटाओ
एक दूजे से प्रीति करना, हिलमिल काम करना
हो ऽ ऽ साकार हो स्वप्न बापू के ऽ ऽ
संगठन सें चलते रहना, भूलो न उनका नारा ।।१।।

खेती की ये मेहनत करके, उत्पादन को बढाओ
फैल ना पाये भूखमरी ये बेकारी को हटाओ
हो ऽ ऽ ये जिम्मेदारी हम तुम पर ऽ ऽ
ज्ञान बुद्धि का आश्रय लेकर चलना काम हमारा ।।२।।

निरक्षर को साक्षर बनाओ, आदर्शता से चलने
इमानदारी दिल में रखकर, पाप कर्म को भूलने
हो ऽ ऽ ऊंचे विचार हो सबके
देर न लगने पाये, होवे जीवन मे उजियारा ।।३।।

सत्य अहिंसा को राहोंपर, चले सभी प्राणी
जैराम कहे सुखमय जीवन, होवे सभी प्राणी
हो ऽ इसमे ही सच्ची भलाई ऽ ऽ
इन वचनोंको जो पालेगा, ना लगेगी किनारा ।।४।।

भजन क्र २० तर्ज– दो हंसोंका जोडा बिछड गयो रे

आज छोडी है, मानव ने नीति मानवता
इसीलिए आते संकट विपदा ।।धृ।।

प्यार की राहे भूली, सच्चाई से मुख मोडा
स्वारथ में डूब रहे, अंग में है क्रोध भरा
विचार न तनिक पाप पुण्य, सरपे काल खडा
इसीलिए भगवान का कोप ये होता ।। १ ।।

धरे न पुरखोंके वचनोंको कभी ये दिल मे
करे न प्रेम सच्चे कर्मो से, नीतिसे
बुराईयाँ देखते रहे, वो पर जीवों की
पहिचाने न अपने वो, कभी दुर्गुण को
इसीलिए फैली जगमें दानतता ।। २ ।।

नाता तोडा निसर्ग और उसने प्राणी से
भूलते वो चला, दया भाव और करुणा को
कहे जैराम, हुआ उलटा ये, खेल दुनिया का
जहाँ भी देखो है, बोलबाला अन्याय का
भगवान की सत्ता भी वो ठुकराता ।। ३ ।।

भजन क्र. २१ तर्ज- मुरली वाले – –

इन स्वार्थी लोगोंसे हुआ मैं तंग
हर वक्त मुझपर जमावे ये रंग ।।धृ।।

अपने गरज के लिये दौडे दौडे आते
काम निकलने पर ये बदनाम करते
इनके रवैये से मैं हो गया दंग ।। १ ।।

हर वक्त विश्वास सबका मैंने किया
आखिर में मुझ को धोखा इन्होंने दिया
डालकर मुसीबत में छोड दिया संग ।। २ ।।

भोलेपन का फायदा, कइयोंने उठाया
विश्वास देकर विश्वास घात किया
त्रस्त हो गया है, मेरा जीवन ।। ३ ।।

कहे 'जैंराम' किसपर करूँ भरोसा
तेरे बिन भगवान, किसी पर न आशा
तेरे नामपर मरना जीना, यही मेरा ढंग ।। ४ ।।

भजन क्र २२ तर्ज– एक प्यार का नगमा है

प्रेमी मेरा वो सच्चा है, मेरे नीति पे चलता है
उससे मेरी पटती है, वही मेरा सितारा है ।।धृ।।

उसकी चिंता रहती है हरदम याद आती है उसकी क्षणक्षण
रहे मन में नही चैन, समझे मेरा वोही मरम,
उसपे जीवन निछावर है, उसको सबकुछ मान लिया ।।१।।

मेरे काम जो आता है, उससे मेरा नाता है
वोही माता पिता है वो ही मेरा भ्राता है
सब कुछ है वो ही मेरा, वो ही मेरा रक्षक है ।।२।।

उसके लिये मैं हूं कुर्बान, वाजी है तन मन धन
हर्षित सत्मार्गपर, धर्म नीति से चलता हो
दीन दुखियों को अपनाये वो ही मुझे प्यारा है ।।३।।

दुजे दु:ख में दुखी होवे, दुजे सुख में सुख पावे
है जिसकी भावना ये, वो ही सबका कर्ता है

जैरामदास कहे वो नर, मेरी शक्ति है और बल
उसे मेरा ऽ ऽ है भरोसा, वो ही मेरा सिकंदर है ॥४॥

भजन क्र २३ तर्ज– सुन चंपा ऽ ऽ सुन तारा

जिसकी जिसपर है श्रद्धा, वो ही होता उसपर फिदा
अरे बडा मजा आवे, वो दिन और रात
खो दिया सुध बुध, सुझे ना दिन रात । धृ॥

सच्चा है वो ही मतवाला, जग में उसका है बोलबाला
स्वरुप पाया, छोडी माया, लगे ऽ ऽ राम, प्यारा ॥१॥

बना है राम का वो बंदा, खोटा करे न कभी धंदा
सत् अपना; शान्ति पाया; हुवा भवपारा ॥२॥

देखे वो एक ब्रम्हसारा, प्रभुसे नाता उसने जोडा
जहाँ जाये मिट्टी छुवे, स्वर्ण वो बन जाये ॥३॥

कहता है जैराम सुनो भाई, जिसकी लगन लग गई
ऐसा छन्द; परमानंद;
भक्त भगवान का इशारा ॥४॥

भजन क्र. २४ तर्ज– पायो रे मंने राम रतन धन पायो

पायो रे मैंने राम रतन का खजाना ॥धृ॥
धन दौलत संसार फीका लागे ऽ ऽ
क्षणक्षण हरि दर्शन को भागे ऽ ऽ
किसी का न लेना देना, पाया रे मैंने रामरतन खजाना ।१।

जो भी करता, काम जगत में ऽ ऽ
हरि को बसा लिया मैंने दिल में ऽ ऽ
ज्योत ने ज्योत जगाया, पाया रे मैंने रामरतन खजाना ।२।

छूटी ये संसार की झंझट ऽ ऽ
हरी ये संसार मैंने घटघट ऽ ऽ
अपने नयन ऽ बसाया, पाया रे मैंने रामरतन खजाना ।।३।।

जैराम कहे गुरु कृपा बिन ऽ ऽ
मिलत नही किसी को भी ये धन ऽ ऽ
जिसने शब्द पहिचाना, पाया रे मैंने रामरतन खजाना ।।४।।

भजन क्र. २५ तर्ज– तन डोले मेरा

मुझे ध्यान लगा, वैराग ऽ जगा
मैं गया उन्मनी स्थान रे, वहाँ पाया मैंने सांवरिया ।।धृ।।

निर्मल बन में अपने तन मे मन मंदिर भुवन मे
झांकी देखी मैंने वहाँ की, पाया रे निजधाम
झांझ मंजीरा ढोलक बाजे, वहाँ बाजे पायलिया ।। १।।

नूतन गायन नित्य होवे ऽ राधा रास रचाये
कृष्ण ये ही छबी दिखाये, मन मोहन गिरधारी
खेल इनका है नटखट पाये झटपट, बिरलेने ही आजमाया ।२।

जैंराम कहे गुरु कृपाबिन, मर्म न इसका जाना
ये सब खेल है आत्मतत्व का, आत्म तत्व पहचाना
आप मे आप देखा जिसने, जन्म उज्वल किया ।।३।।

भजन क्र २६ तर्ज– एहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तो

आज जगमे जहाँ वहाँ हो रहा है अत्याचार ।
जिधर देखो उधर फैल रहा है भ्रष्टाचार ।।धृ।।

पाप पुण्य ना देखे, नीति धर्म न परखे ।
रख भाव करे मन मे–स्वार्थ अपनाही देखे ।
तत्व न मिलते है किसीसे- ऐसा है व्यवहार ।।१।।

ढूंढे बुराईयाँ नित, दूसरों की गलियाँ।
देखे न अपने अवगुण, ऐसे है छलियाँ।
मुख मोड मानवता से करे, दानवता से प्यार ॥२॥

ईर्ष्या की लहरे उड रही है ये चारों ओर।
शांति का झूठे जग मे-लगता नहीं है ठौर
कुचले जाते निर्दोषी, हो रहा है अत्याचार ॥३॥

जंराम कहे दया धर्म-ना किसी के पास
झूठी दिखावे ममता-धरकरके ये खोटी आस।
ऐसे नीति से जगका-होगा एक दिन संहार ॥४॥

भजन क्र २७ तर्ज-- क्या मिलिये ऐसे लोगोंसे
(स्वाभिमानी पुरष के लक्षण)

स्वाभिमान के बल पर जिये जो, वो नर अमर कहलाता है
स्वावलंबी जीवन बिताकर-वो ही मोक्षपद पाता है ।धृ।

मन रखे ना किसी की दौलत मे-कर्म करे निर्भय बनकर
भय रखे नित, नीतिधर्म का-सत्यता पर रहे निर्भर
प्रीत करे वो सच कर्मोसे-वोही सपूत कहलाता है ॥१॥

चन्दन जैसा घिसता रहे, जीवन मे खुशबू लाने को
पवन प्रवाहित होवे जगमें, कीर्ति महक महकाने को
मुरझाई कलियोंमे हरदम-ज्ञान फौवारा देता है ॥२॥

चांद बिना चकोर न भाये-ऐसी प्रीति पर आत्मा से
लगन उसकी वैसी ही रहती-दीन दु:खियो के दुखों से
मान अपमान का ध्यान न जिते हो-जनसेवक कहलाता है ।३।

कर्म ही उसके भजन बने है-जो जो करता है वो काम
छवी निहारे वहाँ प्रभु की-मिले उसे वहाँ शांति धाम
जंराम कहे वोही प्यारा-सबका दुलारा होता है ॥४॥

घमंडी पुरुषो के लक्षण

भजन क्र. २८ तर्ज– क्या मिलिये ऐसे लोगोंसे

धन पुत्रका गर्व जिसे हो-जिन्दे मे मरे रहते है
पशु सरीखा जीवन इनका-पेट के खातिर जगते है ।धृ.

आशा, तृष्णा मन में रखकर-व्यवहार करे हर दम झूठा
अपने थोथे गाल बजाकर-स्वार्थ हितमे रहे लिपटा
पर जीवों को दुख देने मे-अपनी खुशी मनाते है ।१।

चाले इनकी अजव निराली-हरदम करते गद्दारी
रहम नही थोडी भी दिलमे-आदत है इनमे बुरी
शैतानीं हरदम करके ये-भोले जनोंको ठगते है ।२।

लाज शरम का डर नही इनको-बतलाते बुद्धिमानी
धर्म कर्म को ताक मे रखकर-करते अपनी मनमानी
मानवता को भूल करके ये-दानवता से चलते है ।३।

जैरामदास कहे ऐसे नर-भूमि भार कहाते है
इह लोक सधे न परलोक सधे-प्रेत सरीखे घुमते है
लाद के गठरी सरपर दुखकी आवागमन मे बधते है ।४।

भजन क्र २९ तर्ज–दुनियामे हम आये है तो जीना ही पडेगा

कर्म भूमि में आये है तो काम करना ही होगा
इस भव से तरना है तो भजन करना ही होगा ।।धृ ।

प्रपंच करके परमार्थ को जिस नर ने चलाया
नीति नियम को साध, मार्ग सत्य का लिया
चले नेकी से हर वक्त वो प्रभू को पायेगा ।।१ ।

विचार कर क्षण क्षण मे वो कदम अपने बढाता
त्याग राह झूठकी वो सत्य हात मे लेता
किसी से न करे बैर वो जीवन सुधारेगा ।।२।।

देना और लेना प्रेम यही उसको है भाता
वो ही जोडे जन्म जन्म का सब जीवोसे नाता
इहलोक और परलोक मे सुख वही पायेगा । ३।

जैंराम दास कहे कर्म अपने तुम परखो
आये हो किस कामसे यह मर्म तुम निरखो
मर्म न समझे जो वो चौराशी भोगेगा ।।४।

भजन क्र. ३० तर्ज– दुनियामे हम आये है तो जीनाही पडेगा

हरी के भजन बिना किसीने सुख नही पाया
लाखो में बिरले ने इस मर्म को प या ।।धृ।।

लेने के लिये लगता नही द्रव्य खजाना
दिखने मे आसान है पर मुश्किल है लेना
दृढभाव जिसने मन मे रखा-उसने आजमाया ।।१।।

नीति नियम के व्रत को पालन जो नर करे
उज्वल बना के भाव श्रद्धा-दिल मे धरे
षड विकारों को जीत-आशा तृष्णा भगाया ।।२।।

त्याग, वैंराग और ज्ञानसे भक्ति को पाया
घर के संतो का संग वो जीवन मुक्त भया
नित दिन आत्म चिंतन से स्वरुप मे रम गया ।।३।।

जैंराम कहे राम रस जिसने ग्रहण किया
सच्चा मजा मानव जनम का उसने ही लिया
मूर्ख न जाने भेद ये-भलों ने आजमाया ।।४।।

भजन क्र. ३१ तर्ज– मज भेट सख्या गोविंदा

जो जाने दिल की बात-आत्मज्ञानी वो ही कहलाता रे ध्रृ।
आंतरिक अनुभव-जिसने पाया
सब घट में है वो ही समाया।
अज्ञानी की निकाले भ्रांति रे ।। १ ।।

अन्दर उज्वल-बाहर उज्वल
जैसे निर्मल-गंगाका जल
पोपट पंछी जाने न मात रे ।। २ ।।

द्वेष भाव नही छल कपट
रहे इनको नित् भक्ति का बल
बांझ जाने ना गर्भवती की बात रे । ३ ।।

भूत भविष्य दुनियां को बताये
अपना भविष्य देख ना पाये
वो करे नित अपनाही घात रे ।। ४ ।।

जैंराम गुरु बिन अनुभव न पाये
मुढ को कितना-ज्ञान बताये
कई बिते दिन और रात रे ।। ५ ।।

भजन क्र ३२ तर्ज चांदी की दिवार न तोडी

बापू के वचनों को निभाने हमको मरना जीना है
उनके स्वप्न साकार करने हमें तैयार रहना है ।ध्रृ।

रहा अधूरा काम उनका, फर्ज हमारा पूरा करना
चाहे कितनी मुसीबत आये, चाहे ये तन मन धन जाये
उसकी न पर्वा हमको तनिक भी आजादी को टिकाना है ।१।

सुखी बनाने जीवन सबका सबसे प्रीति जुडाना है
नीच ऊँचका भेद हटाकर सबको गले लगाना है
एकता के नीव पे चल ऐसा कदम उठाना है ।२।

संगठन के पुजारी बनकर सबको आग बढाना है
नजर डाले कोई देशपे हमारे उसको सबक सिखाना है
कभी न कर पाये गद्दारी गद्दारों को भगाना है ।३।

जैरामदास कहे बतन का गर्व सब मे भरना है
शपथ दिलाकर मर मिटने को तैयार करना है
कितनी आपत्ती आये टकराकर हमे जीना है ।४।

भजन क्र. ३३ तर्ज– रामचंद्र कह गये सिया से

दुनिया देखो लन्दी फन्दी स्वार्थ हित प्रीति करती है
अपना उल्लू सीधा करने हर क्षण तत्पर रहती है ।धृ।

गरज पडी तो दौड के आते झूठीं प्रीत दिखाते है
काम निकल जाने पर वो फिर नमक हरामी बनते है
ऐसीं दुनिया की रीति मतलब अपना साधते है ।१।

सज्जन करते उनकी भलाई पर वो बुराई करते है
पाप पुण्य का विचार मन मे थोडा नही ये रखते है
निर्दयी बनकर दानवता का भाव ये मनमे रखते है ।२।

सत्कर्मोको छोड के ये जन झूठी संगत में रमते है
ठग ठग का मेला बनाकर साधू संतो को सताते है
सत्य का तो नाम न सबपर नीच भावना रखते है ।३।

इनके ही बुरे कर्मोसे धर्मपतन पर जाता है
रोक न लगाये इनपर अगर तो समाज चरित्र हीन बनता है
जैरामदास कहे इन सबसे बनता है, बचकर हमको चलना है ।४।

भजन क्र. ३४ तर्ज- सुख के सब साथी

तेरी ऽ ऽ नेकी बदी, देख रहा है भगवान ।
उससे ऽ ऽ उससे ऽ ऽ उससे छुपी ना कोई बात है घृ।

कणकण का है जानन हारा सबका वो है पालनहारा
निर्बल का है वो बलिहारा निर्धन का है धन ।१।

जगका वो ही कर्ता धरता तीन लोकमे उसकी सत्ता
किस गरुर मे भूला प्राणी छोड दे गर्व गुमान ।२।

कितनी बतावे तू चतुराई झूठी चाले छुप ना पाई ।
दुर्योधन सा व्यवहार तेरा ज्ञानी समझलेता है भाई ।३।

सच्चाई का साथ वो देता झूठ फरेब को है ठुकराता ।
जैसे जिसके भाव है मन के वैसाही देवे गुण ।४।

जैराम कहता अन्तर्यामी सारे जगतका है वो स्वामी ।
उसके आगे कुछ ना चलती भ्रम छोड नादान ।५।

भजन क्र ३५ तर्ज- माल कौस राग

मै जोगी जोगन छाडन निकला !घृ।

ढूंढा मैंने तीनों लोक को, वन, दरिया और तीरथ को
कही न लगा ऽ ऽ पता मुझको ।१।

नैंन तरसते दिन रात, अलख पुकारु रात दिन
सोवत जागत अष्ट प्रहर ।२।

मद्रा आसन ध्यान लगाऊं माला लेकर नामजप करुं
मिले नही उसका ठिकान ।३।

ढूंढत ढूंढत पांव थक गये, बेचैनी आये मन मे मेरे
कोई न बताये राह ।४।

जैरामदास गुरु शरण में आया, देह के अंदर जोगन दिखाया
जुड गया उनसे जिया ऽ ऽ ।५।

भजन क्र ३६ चाल– तेरे पूजन को भगवान

अमर हो गया जो नर, फिर क्या दुनियाका रखे डर ।धृ।

छोडो दुनिया की लाज, करने जन सेवा का काज
मन मे रखकर निष्काम भाव, समझे सबको कुटुंब परिवार
सब आत्माको अपना देखे, अवगुण सत्‌गुण पल मे परखे
जैसे जिसके होवे विचार, उसको वैसा पटाये सार ।१।
सतसंग विन न करे दूजी बाते, सबको धर्म नीति सिखाय
मानव धर्म का देकर ज्ञान, करते है सबका उद्धार ।२।

जड चेतन मे सत्य पहिचाने, अमीर गरीब को एक माने
बसाने नैंनोमे भगवान, विश्व बन गया उसका घर
भेद भावना कभीं न जाने, सब को ईश्वरुप हीं जाने
बतावे ऐंसा जैरामदास, वहीं प्राणी होवे अमर ।३।

भजन क्र ३७ तर्ज– मुझे है काम ईश्वर से

हमारे बोल कीं किमत तुम्हारे पास नही भाई ।
निभेगीं कैसी तुम्हारीं, हमसे ये मिताई ।धृ।

तुम्हारा कितना करे सत्कार, उसका न तुम्हे विचार
प्रेम से पेश होते तुमसे आखिर तुम करते बुराई ।१।

तुम्हारे लिए तन घिसे, प्राण भी कुर्बान करे
उसका न तुम्हे ध्यान है आखिर को करते लढाई ।२।

सताती रहती है हरदम; तुम्हारे भलाई की चिंता
देखकर तुम्हारी दुर्दशा, तडपता जीव हरदम ही ।३।

कहे जैराम बुरा न मानो, संत परोपकार में घिसते है
अपने समान सबको माने, यही उनका कर्तव्य भाई ।४।

भजन क्र ३८ तर्ज– बन्सी का बजाना छोड दे

तुम हमसे करते गद्दारी, हम कब तक सहन करेंगे
करे तुमसे बाते प्यार भरी, तुम छलते हमे रहोगे ।धृ।

व्यवहार तुम्हारा है यह गंदा मन तुम्हारा है यह अंधा ।
देखे न अपनी गल्तियाँ, काम क्रोध के पिछे भागे ।१।

खुद को समझते हो धनी ज्ञानी, हमे समझे हो अडानी
ज्ञानी से अनपढ अच्छं है, जिसके विचार ऊँचे होंगे ।२।

अधर्म अन्याय का तुम्हारा व्यवहार, सत्य का नही है कुछ भी सार
चालबाजी हमसे करते हो, कैसे शीश तुम्हे झुकायेंगे ।३।

जैराम कहे मानवता देखो, नीति मर्यादा को परखो
भाई चारे का व्यवहार करो, हम तुम्हारे बन जायेंगे ।५।

भजन क्र. ३९ तर्ज– बन्सीका बजाना छोड दे, सुदर्शन चक्रधारी

अब काहे को बकवास करते हो, हम बात न करते तुम्हारो ।धृ।

नाहक झगडा मोल लेते हो, तुम्हारी हमारी नही बोली
हमसे तुम्हारा न मतलब है, ना कुछ हमको देते हो
हमारा काम है हरी भजन नाहक करते मुजोरी ।१।

झूठे लाछन के लगाते नारे, इसमे तुमको क्या मिलेगा प्यारे
काला अपने मुंहको लगाते हो, कबतक चलेगी गद्दारी ।२।

बलधारी था रावण कितना, सीता हरण उसने किया
जब आया मौका रामसे, दास शीश उसका उतरा ।३।

पर निंदा पर धन जो रखता कही भी उसकों सुख ना मिलता
शैतान बना जीते जी वो, घुमे चौरासी की फेरीं ।४।

जंराम कहे जग में आये हो, लायक काम करके दिखाओ
अमर नाम छोडकर जाओ, इसमे तुम्हारी बहादूरीं ।५।

भजन क्र. ४० तर्ज– गरीबों की जिंदगानी भारी सजा

दो दिन की जिंदगी फिर क्या आना कानी ।
कोई आये कोई जाये यही कहानी ।धृ।

किसका रहा महल, और किसकी रही दौलत ।
किसका रहा हाती, घोडा, किसकी रही जमात
टिकी नहीं कभी है किसीकी जवानी ।१।

किसकी रात किसका दिन इसका न भरोसा
कोई कहाँ जाये इसका न ठिकाना
गर्व की बात में है नादानी ।२।

बात करे सौ साल की पलका न ठिकाना
परखा; उसने ही तोडा आना जाना
वेदशास्त्र संतो की यही है वानी ।३।

जैंराम कहे क्यों तू बनता दीवाना
झूठे माया का देखता है सपना
निजरुप पहिचान ले अज्ञानी ।४।

भजन क्र ४१ तर्ज– सच्चे सेवक बनेंगे

ऊंचे भावको दिल मे रखकर
आदर्शता सिखलायेंगे
अरे, गरीब अमीर का भेद मिटाकर
जीवन ऊँचा बनायेंमे ।धृ।

अपना पराया भेद भुलाकर
सबको गले लगायेंगे
जिसमे हो कुछ कमी उसे हम,
सच्चा, ज्ञान सिखायेंगे
किसी बात की कमीं ना होये,

ऐसा सबक सिखायेंगे ।१।
संगठन के पुजारी बनकर
नीति धर्म समझायेंगे
हर प्राणी मे रामराज्य की
शक्ति भर दिखलायेंगे
गुंडा, गर्दी, पाखंडियों को
डंडा लेकर भगायेंगे ।२।

बापू के उन वचनोंको
पूरा कर दिखलायेंगे
आजादी की मशाल लेकर
अंधकार को मिटायेंगे
पिछडी हुई पुरानी रुढियां
अंध श्रद्धा को हटायेंगे
मानवता का पाठ पढाकर
दानवता को भगायेंगे ।३।

मानवता का मंदिर बनाकर,
आत्म ज्योत जगायेंगे
सुविचार के फूल चढाकर
अपना फर्ज निभायेंगे
गांव के झगडे वहीं मिटाकर
सच्चा न्याय दिखायेंगे ।४।

जैरामदास कहे किसी पर
अत्याचार ना होने देंगे
सतर्क रहकर प्राण भी देकर
अन्याय को दूर हटायेंगे
बेईमान और पाजी गधोंको
अच्छा सबक सिखायेंगे ।४।

भजन क्र. ४२ तर्ज– तेरे पूजन को भगवान

तेरी रहेगी जगमे शान, अपने-परसे जगको जान ।धृ।

जो, जो बीते तेरे उपर,
वैसा तू दूसरों को समझले,
अपनी आप करले पहचान ।१।

तूही अपना दुख ना जाने ।
पीर पराई कैसा माने ।
बिती बात भूला नादान ।२।

जैसे तेरे भाव है मन में
वैसाही तू जनको देख ।
बूरा अच्छा देखे मन ।३।

काम, क्रोध भरा है तुझ में
दया, भाव आयेना दिल में
व्यवहार करे जैसा शैतान ॥ ४ ।

पाया आत्म अनुभव जिसने
वो ही सुख, दुःख सबके जाने
जैराम वही है रे महान ॥ ५ ॥

भजन क्र ४३ तर्ज– हम लाये है तुफानसे किश्ती निकालके

हम आये तेरे दर पे आज भावना लेके
ठुकराना नही हमको नादान समझके
तुम बिन ना कोई साथ मेरा डुबती नैय्या के ॥धृ ।

माया के जाल का मैंने छोडा रास्ता
बिठाई मैंने दिल मे तेरी एक आस्था
दे दो सहारा मुझको तुम बाहोंको खीचके । १ ।

किनने अडंगे राहोंपे खडे है सामने
पगपगमे घबराये जिया धैर्य ना मन मे
मुसीबते आ रही, पहाड कामक्रोध के । २ ।

आशा और तृष्णा रीछ ये संसार के बन मे
आव्हान करे लोभ शेर विश्व गगन मे
मद मोह भेडिया ये करे शब्द तान के । ३ ।

जैरामदास कहे तेरे बिना कोई ना आधार
नैना अडी कन्हैया मेरी आज मजधार
तुम लाज रखो मेरी प्रभु विनती सुनके । ४ ।

भजन क्र. ४४ तर्ज– अगर है ज्ञान को पाना

करे भगवान पूरा उसका जो सच्चे राहोंपे चलता है ।धृ।
वह किसीसे कुछ न मांगता, भगवान पूरा करते है
सभी को अपना कहता है, मजा ईश्वर की लेता है । १ ।

निष्काम कर्म है जिसके, उसको ही सब कुछ मिलता है
चाहे जगभीं रुठे उसपर, न कोई बिगाड सकता है। २।
"उसका कुछ बिगड़ता है"

हो सब जीवोंके प्रति भावना उज्वल मन की
ना उसको कमी रहे धनकी उसे बिन मांगे मिलता है।३।

रखे ना द्वेष कभी दिलमे गरीब हो या अमीर कोई
सबको समान माने वो समदृष्टा कहलाता है । ४।

सच्ची नीति जिसके पास उसकी ही जीत होती है
जगत मे जाये जिस कोनेमे कहीना हार सकता है ।५।

कहे जैराम अपनाया इस मार्ग को जिस नर ने
धन्य है वो ही, इस जगमे मरकर अमर रहता है । ६ ।

भजन क्र ४५ तर्ज- अगर है ज्ञान को पाना

जो बुरे राहोंपे चलता है, जीवित मरा कहाता है ।धृ।

कितना भीं होवे धनी-ज्ञानी बुरा जगतमे कहलाता है
अपने को समझे अच्छा करे न कदर कोई उसकी । १ ।

बानीपर सत्य ना जिसके वो नालायक कहाता है
दौडता धनके पीछे वो छल कपटी कहाता है २ ।

मीठी बाते बताकर वो भोले जनोंको ठगता है
भरोसा नही फंसाये कब और किसका प्राण लेता है।३।

भरोसा नही करना इनका, नही तो धोका होता है
सबूत कितने मिलते है वेदोंमे भी यह लिखा है। ४।

कहे जैराम गुण ऐसे जिस नर के पास मे है
सुख ना मिलता कभी उनसे बनिस्बद दुःख ही मिलता है।५।

भजन क्र. ४६ राग- दर्बारी ताल- त्रिताल

तर्ज - दुनियाँ के रखवाले

ओ ऽ ऽ दुनियाँ के बनानेवाले,
मोरी बिगडी तू रे बना दे,
मोरी बिगडी तू रे बना दे ।धृ।

तुमको खोजूं भूला भटक, नांव लगा दे किनारे
दर्द भरी ये करुण कहानीं, तुम बिन कौन सुन पाये
भगवान दे दे सहारा ऽ ऽ
किस्मत मेरी तेरे हात मे, चाहे बनादे चाहे बिगाडे
हम जी रहे तेरे सहारे ।। १ ।।

देखूं चारों ओर पागल बनकर, चंदा बिन चकोर
वैसी गतीं हो रही मेरी, गोवर्धन गिरधारी
मनमंदिर सुना मेरा ऽ ऽ
बिना रोशनी दीपक नैंना, ज्योति से ज्योत जगा दे
तू सुरज हम तारे ।। २ ।।

घोर माया, अंधकार मे खाऊं हरदम ठोकरे
जिया मोरा नित घबराय हिम्मत जाये हारी
लगे ना मन ये मोरा ऽ ऽ
ज्ञान ध्यान ये कुछ ना सुझे, कोई ना काम हो पूरा
घूम रहा हूं मारे मारे ।। ४ ।।

आस धरी है मैंने तुझपर, चाहे मारे तारे
बनी बिगडी का तू ही सहारा तुम बिन कौन हमारे
जैंराम द्वार खडा ऽ ऽ
भूले का है तू हीं सहारा, रखियो लाज मोरी
अब तू ही- श्रीद सम्भाले ।। ४ ।।

भजन क्र ४७ तर्ज-- अवताराचे कार्य कराया

अरे, बुरी व्यसन मे फँसी है दुनिया
चरित्रवान कोई बनावे क्या ? ।धृ।

दिनों दिन बदल रहा है जमाना
व्यसन, फॅसनके पीछे जाये
धर्म नीति को कुछ न समझे
इससे भलाई होगी क्या ? । १ ।

इमानदारी को बेचके खाये
बेईमानी को अपनाये
रहम किसीको किसीका नहीं है
इसमे शांती मिलेगी क्या ? । २ ।

गुंडा गर्दी से करे गुजारा
दीन दुखियोंको नित्य सताये
खून चूसे ये फाँस डालकर
देश को सुखी करेंगे क्या ? । ३ ।

ऐसी नीति जिसने अपनाई
रहो ठुकराते उसे हरदम
साम, दाम, दंड भेद को लेकर
सजा देने मे हर्जा क्या ? । ४ ।

जॅंरामदास कहे जिस मे भाई
राष्ट्रहित कीं प्रीति है
उसी मार्ग को चलंगे लेकर
राम राज्य मे देरी क्या ? । ५ ।

भजन क्र. ४८ तर्ज– अवताराचे कार्य कराया वेळची अजूनी उरला का

इस देशकी जिम्मेदारीं हम तुम सबपर निर्भर है ।धृ।

बुढा हो या जवान कोई धैर्यसे काम करना होगा
तन मन धनसे हात बटाओ जिम्मेदारी सरपर है ।१।

जन्म लिया इस पवित्र भूमिपर ऋण इसका चुकाना है
वक्त आनेपर प्राण की बाजी दे वो ही शूरवीर है ।२।

परिवार समझो देश की जनता, न हो किसीको कोई कमी
मिल जूल करके काम करे जो वही सच्चा दिलवर है ।३।

अमीर हो या गरींव कोई किसीपर अन्याय ना होवे
न्याय का शस्त्र हातमे लेकर न्याय बराबर देना है ।४।

जैरामदास कहे अब बैंठनेका वक्त नही
द्वेषभाव को भूला करके कार्यं निभाना हमको है ।५।

भजन क्र. ४९ तर्ज- सव मांगनेवाले बैंठे है तुमरे दरबार मे बाबा

समाज सुखी तो देश सुखी, समाज भूखा तो देश दुखी
एक एक समाजसे ग्राम बना ।।
कई ग्रामोंसे यह देश बना ।
अच्छे बूरेका विचार न करे तो
मुसीबत आये कठिनाई की ।१।

बैंठे कितने आलसमे, काम करने की फिक्र नही
बेकारी इनसे बढ गयी, नही फिकर उदर पोषणकी २।

दस कमाये पचास खाये आमद से जब खर्च बढा
आपस में जब झगडा बढा तो आई पारी रोने की ।३।

कितने को लगे व्यसन बुरे, कमाके दिनभर खावे ठोकरे
रोवे अन्न के लिए बींबी ये, ऐसी अकल इन शैंतानोंकी ।४।

खुद बना जब यह कंगाल, घूस खोरीका डाले जाल
मेहनत वालोंका लुटे माल, टोली बनाकर गुंडोंकी ।५।

इस बीमारीकी एक दवा, अब सत कर्म को पहिचान लो
स्वावलम्बी जीवन बना न सके, तो भूकमरी ना मिटनेंकी
जैंरामदास कहे जिसके लायक जो काम हो तुरंत सौपो
मुफ्तका खाने वालों को फल चखाओ करनींकी ।

भजन क्र ५० तर्ज– वो बसंती पवन पागल

ये खिसकतीं उमर तेरी, जाए बीते रे जाने न दे
ये खिसकती उमर तेरी ।घृ।

गममें समझे याद वही, याद न रही मिटने पर
होश जब आई, माया भरमाई, ध्यान नहीं मिटने पर
ऐसा खेल बना है,
न जाने कोई यह गति ।।१।।

दुनिया है ये मुशाफिर खाना, कौन कब जाय ना खबर
चिडियों का है रैंन बसेरा, बैठे वो किस डालीपर
ना किसी का रात और दिन,
ना जाने कोई करमगति ।।२।।

सत्ता सबपर है, वो निर्भर, चलेगी पलभर यहाँ किसकी
हिलता नही, पत्ता भी यहांपर, सब है निर्भर विधाता पर
कहता जैंराम, भूल न तू, राम इसमे मिले सुगति ।।३।।

भजन क्र. ५१ तर्ज- तेरे दिलका मकान सैया बडा आलीशान

मेरे भारत के किसान तेरे भरोसे सब की जान
अब कहना मेरा मान, हो जा देशपर कुर्बान ।धृ।
करले तन मन से मेहनत कर ले खेती मे उन्नती
भू मे छिपे है हिरे मोतीं, चुनने को कर तू युक्ति
दे दे मेरी बातपर ध्यान
जगमे बढेगी तेरी शान ॥१॥
मुर्झाई कली खिल उठेगी, हरयाली चारों और दिखेगी
शांति सब जीवो को मिलेगी, कोयल पपोहा गीत बोलेंगे
मिटेगा क्लेश ये तमाम,
सुख से बितेगा जीवन ॥२।
देश भक्त ऋषिमुनि पलते तेरे भरोसे ज्ञानी
तूही सबका चक्रपाणी, तेरे हात में जिंदगानी
तूही जीव का जीवन प्राण
जय जवान, जय किसान ॥३॥
नीति नियम पास मे रखकर, चलना कर्म अपने परखकर
अब जिम्मेदारी तेरे उपर, कहे जैरामदास समझकर
पग धर रखकर ज्ञान
सच्चा लगाने निदान ॥४॥

भजन क्र. ५२ तर्ज- सच्चे सेवक बनेगें जब हम

सच्चे सेवक कहलाते, दीन दुखियों को देते साथ
अज्ञानता में डूबी जनता के लिए, बढाते अपना हात ॥धृ॥
उनकी मुसीबत आप उठावे
कष्ट कितने भी होते रहे

धैर्य कभी भी वो ना छोडे
प्राण की बाजी लगा देवे
ढलने ना देवे प्रणको अपनें,
झूटी करे ना कभी वो बात ॥१॥

बनी रहे वो चिंता उसको
देश धर्म का मनमे हित
खाना पीना कुछ ना सुहावे
सब जीवों से जोडे प्रीत
रहीना फिक्र जड कायाकी
इंद्रियोंपे करली मात ॥२॥

परधन को वो पत्थर समझे
पर नारी को माता
दु:ख सुखको समान माने
समदृष्टा कहलाता
सत्यधर्म पर अटल रहकर
आत्म हितकी करते वातें ॥३॥

जैरामदास कहे गुण ऐसे
होते है जिस नरके पास
वोही उद्धारक है समाजका
धन द्रव्य की रखे ना आस
भजन ही उसका धर्म बन गया
जीवित रहकर मुक्त कहाता ॥४॥

भजन क्र., ५३ तर्ज- चल उड जा रे पंछी

बिगडे कर्मो के वो ना चले
उससे तो जाति के पिछडे भले ।धृ।

ज्ञान मान का कितना बडा हो
नीति नियम ना सुधरे
अपना बडप्पन जगको बतावे
दुर्गूण उसमे भरे रे
आप सुधरे ना, जगको सुधारे ऽ ऽ
कैसी शांति मिले ॥१॥

गरीबों के आसुओं से
धन का संग्रह किया
वक्त पडे तो दीन दुखियों के
कभी काम ना आया
कैसे इसको ऽ ऽ धनी कहोगे
दुख पराया भूले ॥२॥

भेष बनाके साधू कहलाये
त्याग के गुणना अंगमे
मन तो इसका भटकते रहता
विषयों के भोग न में
काम क्रोध ये ऽ ऽ खडे है सरपर
कैसे ब्रीद संभाले ॥३।

जैरामदास कहे अंगमे सत्यव्रत हो बाना
पढे लिखेसे अनपढ अच्छे, ऊंचे विचारोंसे चलना
वोही मानव मुझको भाये, पीरपराई कह दे ॥४॥

भजन क्र ५४ तर्ज– मुझे प्यारा भारत मेरा

ग्राम यही मंदिर मेरा । नरनारी शंकर गौरा हो ।
सुविचार के फुल चढाऊं । प्रेम देकर प्रेम लेऊं
यही अस्तित्व हमारा । १॥
ज्ञान खराटा हाथ में लेकर,
उज्वलता लाऊं कूटनीतिपर
साफ करुं षड्विकार कचरा ॥२॥
विवेक मशाल चेतन करके,
भेदभाव अंधकार मिटाके
फैलाऊं उजियारा ॥३॥
मन के भाव निर्मल बनाकर,
समो आत्मा एक मानकर
देखूं ब्रम्ह जोत उजियारा रे ॥४॥
जैरामदास कहे सुनो भाई
मानवता मार्ग ये सही
परख से नाव लग किनारे ॥५॥

भजन क्र ५५ तर्ज– तेरा प्यारा है नाम

मेरा प्यारा किसान मेरा प्यारा किसान
लोग जगते तमाम रखे भारत की शान ।धृ।
तन मन से खेतीमे करता वो काम
खाये ना फुकटमे किसीका छदाम
अपने ही मेहनत पर करे गुजरान ॥१॥
मन में न किसी की ईर्ष्या है इसको
किसीके कामोंसे, मतलब ना इसको

देखे न किसीकी ओ ऊँची नीची शान
अपनेही धुन में मस्त वो रहता
खुद पलता और औरों को पालता
इसीके भरोसे पे लढते जवान ।।३।।

बैल इसके साथी लेवे उसकाही बल
क्रूर प्राणियोंका इसकों थोडा ना डर
नियम न इसको, करता रात दिन काम ।४।।

कहता जैराम इसका सबपर एहसान
ना समझो इसको कोई है ये अज्ञान
यही राम और यही मेरा श्याम

भजन क्र ५६ तर्ज– सजना हमार मोटार कार लेके आयो

गरीबों के अश्रुसे भर रही अमीरों की झोली रे
अमीरों की झोली २ ।धृ।

उनके ही कमाईसे, करे ये गुजारा २
उनकी ही पीर ऽ ऽ धनवान नही जाने रे ।।१।।
कमाते कमाते इनका, जर्जर होवे तन
दाने दाने के लिये ऽ ऽ हरदम ठोकर खाये रे ।:२।।
करे बैल, खावे घोडा मिले नही चारा
रहता है भूखा ऽ ऽ देना इनकी नही जान रे ।।३।।
अन्याय से गुजर रहे, इनके हर एक पल
तो भी निर्भय बनकर ऽ ऽ वो करता जिन्दगानी रे
कहता जैरामदास. क्या कोई देवे साथ
जाने वही ईश्वर ऽ ऽ का बन्दा कहलाये रे ।।५।।

भजन क्र ५७ तर्ज– ऐसा तो नही देखा हमने

जिसका पद उसको ही सोहे रे
क्या जाने रे मति मंद उसे ।धृ।

सन्तों के उस परम सुख को
संत संग बिन कोई ना चीन्हे
चाहे वो कितने शास्त्र पढे
वो न उस मर्म को जाने
जैसे अन्धे को जग अंधा ही दिखे
वैसाही उसके मनमे बसे ।।१।।

नींद लेवे पानी में मछली
उसके गति को कोई ना जाने
गर्भवती के सुख और दुखको
जिसने सहा वही पहिचाने
जायेगा जब उसके वंश मे, वोही नर पा सके उसे ।।२।।

गरीबों के जिंदगी मे जो मिले सजा
क्या जाने अमीर उसकी रे मजा
जो गुजरा है इस राहपर, वो ही समझे उसकी दशा
उसने ही किया उनपर तो रजा ।।३।।
लगाये हृदय गले से --

भक्त भगवान के इशारे
अभक्त उसको क्या जाने
जिसकी लगी है दिल मे लगन
उसको ही सुख दुख समझे रे
कहे जैराम ये भक्ति की नशा, पहिचानो प्रभु के दिवाने ये
~~प्रभु के दिवानेने पायारे पहिचाने~~ ।।४।।

भजन क्र ५८ तर्ज- तेरे सामने वाली खिडकी में

आनंद तो उसको है मिलता, है जिसने ईश्वर को वसमे किया
छोडकर सारी उलझने, हरी के भजन मे मग्न भया ।धृ।

कमतरता न उसको जगमें रही, कभी खाली हाथ नही आये वो
निरखे नित झांकीं नयनोंसे, उसमे ही सब कुछ पाये वो ।
भक्ति की नशा जब चढ जाये, मस्ती न गगन में समाये ॥१॥

हिंमत क्या सामने आ करके, कोई उनसे बकवास करे
गम रहेना उसको थोडा भी, इस तनकी वो चिंता न करे
पिया जिसने ब्रम्हरस प्याला, संकटसे ना वो घबराया ॥२॥

मर्म क्या है इस भक्तिका. जाकर के भक्तोंसे पुछो
अनुभव इस मार्गका जिसने लिया, जाके बर्म उनसे पूछो
आत्माका खेल निराला है, जाने वो ज्ञानी कहलाया ॥३॥

जैरामदास कहे श्रद्धा रखकर, निष्काम कर्म करते रहो
उज्वल बनाके भावना ज्ञान सागर में नहाते रहो
तोड करके जन्म मरण फेरे ब्रम्हपद को उसने पाया ॥४॥

भजन क्र ५९ तर्ज- बंसीके बजानेवाले तेरी बंसी बजा दे

भक्तोंके रखनाले अब तू धर्म को बचाले
बचाले, बचाले अब तू धर्म को बचाले
ये भूली हुई जनताको सत् मार्ग दिखा दे ।धृ।

कितनी ही अबलाओंका शील भंग हो रहा
गुंडा, गर्दी मे रातदिन समाज नीचे जा रहा
ये आया तूफान, ईससे सबको बचाले ॥१॥

ज़हाँ, वहाँ आज देखो हो रहा है अत्याचार
आज मानव नही करता है, पाप पुण्य का बिचार
इस बिगडी हुई रवैया से, मनको हटाले ॥२॥ बचाले

अपने स्वार्थ के कारण कितनों के लिये प्राण
कितनों के घरद्वार उजाडे और कितने हुये हैरान
ऐसे बिगडे दिलवालों को सच्चा सबक सिखादे ॥३॥ बचाले

कितने निकम्मे पल रहे है देशमे बैठकर
यही एक कारण है, भूखमरी छायी सिरपर
इनमे तो काम करने की, वृत्ति जगा दे ॥४॥ बचाले

कहता है 'जैराम' दयालू है तेरा नाम
हर संकटसे तूने छुडाया, किया भक्तों का काम
मुरली की तान सुनाकर, सबको शांति दिला दे ॥५॥

भजन क्र ६० तर्ज– चांद मेरे आजारे

नेता बिगडा है, गांव में झगडा है
रहेना चैंनसे, जनता के धन से
स्वार्थ सुधारे रे । टेक ।

करे भूल भुलैंय्या व्यवहार, झूठ मूठका फांसा डाले,
अपना ही रंग बनावे ऐसी कूट नीति की चाले,
ऐसा तमाशा है ऽ ऽ नटखट की चाल, डाले वो जाल
दुनियाँ लुबाडे रे ॥१॥

बीच दलाल ये बन जाये, आपस में झगडे लगावे,
फैलावे फूट की दरारे, प्रेम भाव में बाधा लावे
एसा तो ज्ञानी है ऽ ऽ करे मनमानी, लोगोंकी हानी
कैसी अनीति रे ॥२॥

जुआ सट्टा और शराब, हुआ इसीसे येतो खराब
बतलावे अपना स्वाब, ऐसे भरे है इसमे ऐब
भूला है धर्म नीति, ऽ ऽ सच्चाई छोडे, प्रीति को मोडे
विषयों में गडारे । ३ ।

कहता है जैंरामदास, किया इसने समाज का नाश
कैसा करे ये विकास, नही खुद को इसका भास
गति नही बदले बिन ऽ ऽ धर्म बचाये, नीति सिखाने, सेवक
हो त्यागी रे ॥४॥

भजन क्र ६१ चाल–

मन के भाव उज्वल करके, नामस्मरण करते जा
आत्मा को साक्षी रखकर, आत्म चिंतन करते जा ।टेक।

ध्यान धारणा न्याय से, मुलाधार के गणपती को पूजते जा
सोहम् नाम का उच्चारण कर विरुद्ध दिशासे जीवको
मिलाते जा ॥१॥

ध्यानी ध्याता तू ही बनकर, लक्षसे अलक्ष में जाते जा
बेगम सुरता ताल लगाकर
गरु को अन्दर पाते जा ॥२॥

अखण्ड ज्योति जल रही निरंजन पुरमे
जीव को शिव में मिलाते जा,
जैंरामदास कहे विना गुरु कृपासे-
ये अनुभव किसने नही पाया ॥३॥

भजन क्र. ६२ चाल– आपसे हमको बिछडे हुये

कितना प्यारा मेरा वतन, इसके लिए दे तन, मन, धन
सच्चा सेवक तूरे जा बन निभाते जा तू अपना प्रण ।टेक।

निर्भय बनकर कर्म किये जा, हर संकटसे तू जूझते जा
पाप कर्म से तू डरते जा, सत् कर्मो में तू मरते जा
दृढ भावना हृतमें धरे, मातृ भूमि की करने जतन ।।१।।

सब कुछ ईश्वर का तू समझले, मेरा कुछ नही मनमे धरले
कर्म फलको अर्पण कर दे, इच्छा मत कर फल पाने की
जो मिलता है गुजर करो, काम न आये पराया धन ।।२।।

जन्म लेकर आया तू भूपर, चलते जा तू नीति परखकर
दया धर्मका मार्ग धरकर. पीर पराई अपनी कहकर
कहे जैराम हिलमिल की, करना है हमें सुखी जीवन ।।३।।

भजन क्र. ६३ चाल– जारी जारी ओ कारी बदरीया

घुली घुली जा रही उमरीयां, परखे नही वो तू सावरिया
नाहक जीवन मुफ्त गमाया
समय का ज्ञान तू नही किया ।टेक।

कितने दिन बिताये है तूने, बुरे कामों मे तू नही जाने
समय खोया अमोल, किया उसका ना मोल
सारे श्वास तूने गमाया ।।१।।

अच्छे कामों में मन नही तेरा, मैं तू पन में ही रे जाये तू घेरा
बांधी आशा की डोर, पाप किया तूने घोर,
पुण्य को नही तूने बचाया ।।२।।

कर रहा तू शैतान जैसा, दिल में आये तो करता है वैसा
तनिक नही शरम, तेरा तुझको न गम
ऐसा झूठा है तेरा रवैया ।।३।।

उमर बिताई अजगर जैसी, जीवित रहकर भी मृत जैसी
कहता जैरामदास, किया अपनाही नाश
व्यर्थ पृथ्वीपर जन्म तूने लिया ॥४॥

भजन क्र ६४ चाल– जारी जारी वो कारी बदरियाँ

कहता है तू मेरी रे खेती, तूने उसे कभी नही जोती
कैसी करे वो तुमसे प्रीति,
कर्म करने की नही हस्ती ।टेक।

याद है तुम्हे गप्पे लगाना, मर्म किसानी का नही जाना
इसमें किसका भला, कौन देगा सल्ला
नेक काम मे नही तेरी वृत्ति ॥१॥

तनसे ना किया इसकी सेवा, मनमे नही है प्रेम भावना
देवे कैसे मेवा, है बेरंग दिखाया
नही है रे तुझमे सच्ची नीति ॥२॥

पराधीनता में बिताया जीवन, स्वप्न मे न सुख मिले एक क्षण
समझ लेरे तू बात, छोड झूठी बकवाद
कर्म को मान्यता दी जाती ॥३॥

कई दिन तेरे अच्छे है बिते, अब ना चलेगी ऐसी ये बाते
कहता है जैराम, कर्म से बढे नाम
छोड देरे तू झूठी ये भ्रांति ॥४॥

भजन क्र. ६५ चाल– कई मानों भारत बासिन्दों

हर वक्त तुम्हारे लिए, दौडके करते है काम,
पर वक्त निकल जाने पर तुम हमको करते बदनाम ।टेक।

दया करुना है बचपनसे, दिल मे प्रेम जगा दिन दुःखियोंसे
इनके लिए में घिसता रहू, उसमे ही मिले विश्राम ॥१॥

वेदशास्त्रमें लिखी है बानी, बतलाते है ऋषि मुनि
पर उपकार सरीखा पुण्य नही, प्रण किया कर्म निष्काम ।२।
स्वार्थी जन अफवाह फैलाये, कितने अडंग राहों मे आये
धन लुटकर ये जनतासे, अब बन गया है धनवान ।३।
कहाँ तक इनकी सच झूठ बानी, सुनकर आता नैनों मे पानी
इन पाखण्डी गुण्डे, लोफरोंने, किया जर्जर जीवन तमाम ।४।
भोला स्वभाव देख के मेरा, दुराचारी ने डाला घेरा
विश्वास देकर विश्वाघात किया लगाते रहे इल्जाम ।५।

भजन क्र ६६ चाल– कही मानो भारत वासियों

मानो कहना मेरा भाईयों, आलस मे न किसीकी भलाई
कैसे भाग्य उजले होंगे तुम देखो न अपनी भलाई ।धृ।
झूटमूठ की संगत लेकर
बकवाद करते है गप्पे लगाकर
कुछ विचार ना करते मनमे
रखते दिलमे कुटिलाई ॥१॥
पर कमाई पर तुम्हारी नजर
फांस डालकर करते उनको जर्जर
खुदका भविष्य तुमने देखा नही
दुसरों को बताते भाई ॥२॥
सत्यका नही तथ्य जुबामे
जीवन खोते झूठी बानी में
कागज की लेकर तलवार, झूठी ये करते लढाई ॥३॥
जैराम कहे आप सुधरो
जग को सुधारनेकी कोशिश करो
तब कीर्ति रहे अमर तुम्हारी कामों मे लाओ सच्चाई ॥४॥

भजन क्र ६७ गेला हरि कुण्या गावा

गांव मे घूमे निठल्या, लगे आलस इसको प्यारा
भरावे नकटों का मेला,
पिये प्याला, शराब में मतवाला ।टेक।

लाज शरम इसको ना किसकी, फिक्र ना रहीं इसको घरकी
बुरी बात बकते वो चला, २
करे वो झगडा, सुध देह की भूला ॥१।

गुजारा करता लबझब वे, रखता मतलब स्वार्थ वे
डालकर चुंगल का घेरा,
फसावे, भोला, दया धर्म को भूला ॥२॥

आज यही चल रहा है हाल, कोई ना देते इस पर ख्याल
दिनों दिन बढ रहा अत्याचार
सच्चा जाये, आज यहाँ पर कुचला ॥३॥

इसको ना रोके जो कोई, समाज की हानि होगी भाई
कहे जैराम जागो भाई,
बुरे कामों मे, होता न किसी का भला ॥४॥

भजन क्र ६८ चाल– सुन चम्पा सुन तारा

सुनो जन की, करो मन की, जिसने समझा वोही तरा
अरें बडा मजा आये सुने आत्मा की ये बात
सही मानो कही वही आये तेरे साथ ।टेक। सुनो

जिसने धर्म नीति पाला, उसका प्रभु है रखवाला
निर्भय हुआ पाई दुआ वही सबका प्यारा ॥१॥ सुनो

सबमे रहकर वो निराला, कीचड से कमल जैसे निकला
जल न ठहरा, रहा कोरा गंगा का पथरा ॥२॥ सुनो

सबको गले वो लगावे, प्यार देवे प्यार लेवे
रखे रहम, सुखी जीवन, सबके नैनो का वो तारा ॥३॥

कहे जैंराम करो विचार, मन से ही पार होगा संसार
इन्द्रियों पे, काबू करले. वोही हूआ भवपारा ॥४॥

भजन क्र ६९ चाल– नंदलाल गोपाल दया करके

व्रंजपाल दयालू श्याम मुझे, अब अपना दास बनाले मुझे
जीससे ही मेरी प्यास बुझे २
यही बिनती करता आज तुझे ।ध्रु।

इस जगतकी ऽ ऽ झंझटमे
बह रहा हूं मै आज यहां
इस डूबती हुई ये नैयाको २
दे दे तू सहारा आज मुझे ।ध्रु।

तेरें बिना ठिकाना नहीं
तुम दौडके हात बढा दो हरी
गोते लगाते जिया तडपे, त्रिताप की आग यहां भडके
इस ज्वाला से तू बचाले मुझे ॥२॥

चल रही आंधी चारों ओर
भृंगकीडा बतावे अपना जोर
इन जीवन कलिओंके उपर २
काल भंवरा हरदम गूंजे ॥३॥ व्रजपाल

राहों मे खडे है क्रूर प्राणी
हरवक्त ये पहुंचावे हानि

इससे मनमें आवे ग्लानी २

धैर्य देकर अब तुम बचा लो मुझे ।४। व्रजपाल

कहे जैंराम दयालू नाम,
सब जीवोंका तू विश्राम
तेरे आज्ञा बिन होवे नहीं काम २
मेरी आस पूरी अब तुम करदो ।५। व्रजपाल

भजन क्र. ७० चाल– कोणा सांगावी कर्म कहानी

मोहे जग से है राम प्यारा, कोई उसको मिलन हारा हो
तोहे किसका है ये बल प्यारा, छोडेना तू उसका सहारा हो ।धृ।

जिसने सुख दु:ख मे साथ दिया, वोही तेरा सब कुछ बन गया
वोही तेरा है तारन हारा ॥ १ ॥

उसकी बानीं पर रख तू भरोसा, झुठ जगत की छोडदे आशा
वो ही डूबते का एक किनारा ॥ २ ॥

औरो के लिये होगा वह बुरा, हमको विपत्ति में उसने उबारा
वो हीं श्याम हमारा है प्यारा ॥ ३ ॥

दिलों जान से हम डटे रहेंगे, वक्त आने पर हम प्राण भी देंगे
यही प्रण है दृढ हमारा ॥ ४ ॥

कहे जैंराम अपनायी नीति, जन्म जन्म की जुड गई प्रीति
कौन उसका बिगाडन हारा ॥ ५ ॥

भजन क्र. ७१ चाल– अब काहेको धूम मचाते हो

अब काहेको खलबल करते हो, दुष्ट भावना धरकर,
आवेंगे पूछने गिरिधर । टेक ।

कबतक छुपेंगे पाप तुम्हारे, एक दिन होगा खुलना,
जो जो करोगे वो वो भरोगे
थोडी रही है कसर ॥ १ ॥

कितने जींव त्राहीं त्राही किय
रहम न रखो दिलमे
पाप पुण्य का विचार न किया, हिंसा का मचाया कहर ।२।

दीन दुखियों और भोले जनपर, जालका डाले फाँसा
चक्रव्यूह का खेल रचकर पाप लादते हो सरपर ।३।

घूसखोरी और कालाबाजार इसमें ही मौज उडाते,
कमानेमें ही जीवन बिताये, परधन पर रहे निर्भर ।४।

जैरामदास कहे अब जागो, दुष्ट कर्म भूल जाओ
आगे सरपर काल खडा है, जावे तुम्हे निगलकर ।५।

भजन क्र ७२ चाल– जब प्यार किया तो डरना क्या

मेरे दिल की धडकन समझ ना पाया
अब तो इसको परखने वाला, मिला नही कोई मन का साया ।धृ।

खिल उठीं थी कलियाँ जो मेरी
मृंग कीडे ने डाली इसपर घेरी
मुरझा गया है जियरा मेरा
मनकी मुराद कोई ना मिटाया ।१।

दिन रात ये तो चिंता सताती
भांति भांति की तरंगे उठती
कोई ना इसे देवे पानी,
सुखी चमन की ये डालियाँ ॥२॥

चली खिसकती इसकी ये दशा
रही ना थोडी मन मे ये आशा
रखा भरोसा एक जगदीशा
की अर्पण मैंने अपनी काया ॥३॥

कहे जैराम दृढ भाव रखा
मार्ग अपनाया मैंने सेवा का
ईश्वर रुप मै सभी में देखूं
निष्काम कर्म को हाथों में लिया ॥४॥

भजन क्र ७३ तर्ज– हमभी है तुमभी हो दोनों है आमने सामने

मत भूल रे ज्ञान ले, तन मनसे स्वहित साधले
समझले देशहित मेरा, उसीमेंही सबकुछ है भरा
जीवनका वही है किनारा, जीना मरना फर्ज है हमारा।
भावना तू रखले ॥१॥ तन मनसे

सारी जिम्मेदारी हमतुम पर, कोई किसीकी ना रखे कसर
दृढ भाव मनमे तू रखकर, चलते जा कर्म को परखकर।
भलाई उसमे मिले ॥२॥ तन मनसे

रखो सत्य भावनाको दिलमें, देखोना बुराई सपनोंमें
देरी ना करो सत्य काममें, धरो पीर अपने मनमें
ये वचन ना भूले ॥३॥ तन मनसे

देशभक्त राष्ट्रपिता गांधी, बेडी तोडी मिलाई आजादी
करदी दुराचारी की बर्बादी, स्वराज्यकी झांकी दिखलादी
स्वाभिमान तू रखले ॥४॥ तन मनसे

कहे जैरामदास जागो भाई, अज्ञानतामें किसकी न भलाई
सत्य अहिंसा को अपनाई, नय्या उसीकी पार हुई
प्रेम दे प्रेम ले । ५॥ तन मनसे

भजन क्र ७४ चाल– कही मानों भारत वासीन्दों

अब वक्त नही है मेरे पास, बेकार बात करनेका
फजूल बाते हमसे करते हो, जिसमे तथ्य नही है सत् का ।टेक।

तुम्हारे संग हम व्यर्थ बैठकर अपना जीवन क्यों खोयेंगे
जीवन उज्वल अपना करेंगे, साधुसंतों के ज्ञान धरेंगे ।
काम में राम को पायेंगे, जहाँ झांकी भरी है ईश्वरकी ।१।

अलाल तुम हो धूर्त पाखंडी एसे ही हमको हो संगी
चाल तुम्हारी है दुरंगी सत्य बानी की है तुममे तंगी ।
स्वारथ में तुम डूबे हो, बाते करते मतलब की ॥२॥

चुगली चहाडी का तुम्हारा धंदा, डालते रहते जीवो पर फंदा
ऐसा तुम्हारा मन है गंदा, किया तुमने अपना चेन्दा
हमें भी बनाना चाहते हो, कैसे आये तुम्हारी झाँसी ॥३॥

जैरामदास कहे एक एक पल है बडा सबसे अनमोल
क्यों करेंगे इसको गोल, प्रभुका करने आयेंगे मोल
नही इस मारग को समझे तो, आये पारी रोने की ॥४॥

भजन क्र ७५ चाल– तेरे द्वार खडा एक जोगी

जानू ना मै पूजा अर्चा, दे दो दर्शन गजानना
द्वार भिकारी आया तेरे द्वार भिकारी आया ।।ध्रु।।
माया से मैं, मुख मोडा, तेरी आस लेकर दौडा
कौन करे उद्धार हो २
मजधार नैय्या मेरी बीच भंवरमें अडी
कौन करेगा पार हो ।।१।। नाजानू
कितनों का संकट टाला जिसने तेरा नाम उच्चारा,
दिया तूने आधार हो ऽ ऽ २
मुझे नही कुछ भक्ति शक्ति, कैसी जोडूं तुमसे प्रीति
कौन सुने पुकार हो ।।२।। नाजानू
बुद्धि का तू ही है दाता, सबका ही कर्ता हर्ता,
त्रिलोकी सरदार हो २
ब्रम्हा विष्णु पुजा करे, भोले शंकर ध्यान धरे
तू है गौरी कुमार हो ।।३।। नाजानू
कहे जैरामदास तुमबिन मैं उदास
सब छोडके आया दरबार
करजोड बिनती करुं तुम दीनोंके दयालू
सुन लो मेरी पुकार ।।४।। नाजानू

भजन क्र. ७६ चाल– अरे रिकामा कशाला फिरतो रे

कैसा अकडते, अकडते चलता रे
थोडी अक्कल ना दिल में धरता रे बाबा धरता
जवानीकी नशा तेरे सिर पर
मारे ताने क्रोध के बलपर

जाये उमर तेरी जब ढलकर
फिर पछताये बुरे कर्मोपर
क्यो घमंड में तू भूलता रे ।।१।। थोडी

चढी बढी बात तू करता
पाप पुण्य को थोडा ना डरता
गुंडागिरी से तू पेट भरता
पर स्त्री पर नजर उठाता
दीन दुःखियों को कैसा तू छलता रे ।।२।। थोडी

जरा नही तेरे पास नेकी
भावना है तेरी बुरे नीतिकी
बात करता चुगली चहाडीकी
लाज शरम नहीं पुरखों की
बदनामीं मे क्यो बिकता रे ।।३।। थोडी

जैंराम कहे दो दिनकी ये नशा
उमर ढले फिर करे कैसा
नही तनका थोडा भी भरोसा
कब उड जायेंगा तेरा हंसा
फिर समय क्यों खोता रे ।।४।। थोडी

भजन क ७७ चाल– बन्सी का बजाना छोड दे

बातों का बनाना छोड दे, अब देखले खेती बाडी
आलस को तू रे छोड दे, काम करने की, कर तैंयारी ।धृ।

सारा समय तूने मुफ्त मे खोया, सच्चे काम में हाथ न बटाया
पर जीवों पर दया न किया नाहक जन्म तूने रे लिया ।
मैं तू पन में खोई तूने रे अपनी उमर सारी ।।१।।

किसान कहता अपने को तू कर्तव्य अपने देखे नही तू
राखे नही कभी खेती को तू डींग हांकते रहता है तू ।
जब करो तबही बतलावोजी, तब होगी इज्जत तुम्हारी ॥२॥

काम में हो नाम मिलारे जिसने जैसा काम किया रे
अपने मन में जिसने बिठाया वहीं उसकी बनगयी छाया रे
दी गई प्रधानता कर्म को क्या जाने वो मुर्ख अनाडी ॥३॥

खुद करो और दूसरोंको बताओ ऐसाही पाठ सबको सिखावो
आप जगो और दूसरोंको जगाओ ऐसी भावना मनमे बिठावो
जैरामदास कहे रे भाई उसमे ही इज्जत तुम्हारी ॥४॥

भजन क्र ७८ चाल– मेरे नैंनोमे भरीं जलधारा

पहिले अपने मनको सुधारे, फिर संग तू हमसे करले ।धृ।
जुडगयी है तेरी मेरी प्रीति
नैनोंसे नैनोंकी ज्योति
तत्व में तत्व मिलाले ॥१॥ फिर

जब व्यवहार तुम्हारा सच्चा
हम सलुक करेंगे अच्छा
तब तुमसे प्रेम से बोले ॥२॥ फिर

स्वार्थ भाव तूम्हारे मन मे
हम न रहे उनके संगमे
हमरी तुमरी नही चले ॥३॥ फिर

हम दिलदार के है साथी
उनसे ही करे हम दोस्ती
उस धुन में नित्य डोले ॥४॥ फिर

जैंराम है प्रेमका भूखा
उसमे ही सदा रहे झुका
हमको कोई आजमालो ॥५॥ फिर

भजन क्र. ७९ चाल– मेरे नैनों मे भरी जलधारा

मन करे सदा सैतानी अटपटी चलावै बाबो ।धृ।
किसी ने नही इसको जाना
बिरले ने ही इसको पहिचाना
हर वक्त करे तुफानी ॥१॥ अटपटी

इसकी जाल बडी दुरंगी
अच्छा बनता है फिरंगी
जीवन की करता हानि ।२॥ अटपटी

इंद्रियोंका है नृपति
उनके उपर उसकी शक्ति
उसके आगे बढे ना ज्ञानी ॥३॥ अटपटी

इसकी तेज है रफ्तार
पवन की भी हुई है हार
इसकी गिनती किसीने ना जानी ॥४॥ अटपटी

जैंराम कहे मन नारायण
येही करे सुखी जीवन
जब लगे धुंद राम नामकी ॥५॥ अटपटी

भजन क्र. ८० चाल– बिगडी बनाने वाले बिगडी बनादे

ओ कमली वाले मुझे, शांति तो दिला दे
आई हुई विपत्तिसे हम को बचाले ।धृ।

डोरी हमारी तेरे हाथ में है
चाहे रुला दे चाहे हँसा दे ॥१॥ आयी

तूही भरा है डगर डगरमें
चाहे गिरादे, चाहे चढा दे ॥२॥ आयी

तेरी सत्ता है हर कण कण में,
चाहे बसा दे चाहे उडा दे ॥३॥ आयी

तूही सभीका अंतर्यामी
चाहे भूला दे चाहे तरा दे ॥४॥ आयी

रुप अनेक सबका तू भूप,
चाहे मिटा दे, चाहे बना दे ॥५॥ आयी

बीच भंवर में पडी है नैया
चाहे निभा दे चाहे डुबा दे ॥६॥ आयी

चाहे जैराम ओ बन्सीवाले
अपना स्वरुप मुझको दिखादे ॥७॥ आयी

भजन क्र ८१ चाल- सबके लिये खुला है मंदिर ये हमारा

गरीबीसे गुजरा प्राणी, कैसी होती जिंदगानी
सुख दुःख वोही जाने, सबको समान माने ।ध्रु।

समझके खर्च करता
अपनी मेहनत से खाता
उधार न किसीका लेना
उसने हीं संतोष पाना
अठल रखे वो धर्मी मनमें ना भेद जानी ॥१॥

अपने कामसे मतलब रखे
किसीको न बुरा देखे
सबके विचार को परखे
वैसी ही बानी निरखे
सलूक करे वैसा उससे, होवे जैसा प्राणी । २॥

घमंड ना छूने पाये
सबको अपना बनाये
प्रेम को वो बहाये
सबको शांति दिलावे
नीति नियम पास लेकर बीती वोही बखानी ॥३।

जैराम कहे विपत्तिसे
दिन ये निकाला जिसने
वही नर अमीर होकर
गरीबों की लेता खबर
दिलावे उनको दिलासा, वही है सच्चा ज्ञानी ॥४॥

भजन क्र. ८२ चाल– मैं तो तुमसंग नैंन मिलाके

मुझमें ऐसी आदत बुरी, देखा ना जाय कसूर ।घृ।
झूठमूठ का जाल जो डाले, सहन ना होवे उनकी चाले
उसका मैं तो लेता सामना, चाहे जाये जान मेरी ।१। देखा

दीन दुःखियोंके दुःख देखकर, जावू दौडकर मैं तो वहाँपर
जो कुछ मुझसे बन सकता है, करुं मैं सेवा पूरी ।२। देखा

ये लगन है मुझे बचपनसे, देश धर्म में तन मेरा घिसे
रातदिन है यही एक चिंता, सब जीव होवे सुखी ।३। देखा

इसमे भी कितने अडंगे आये कितनी, आपत्ति, दुख सहे
इसकी मुझको फिकर ना कुछ भी, अपनाई मैंने फकीरी ।४। देखा

विश्वास देकर दगाबाजी किये, तडप रही है आत्माकी आहे
करुणा कोई मेरी न सुन पाये, जाये पल, पल भारीं ।५। देखा

मतलब की ये दुनिया सारी, गरज निकलते ही करे बेईमानी
जैंरामदास कहे विश्वास तेरा, नैंया पार कर मेरी ।६। देखा

भजन क्र ८३ चाल– सजना हमार मोटार कार लेके

कान्हा हमार ऽ ऽ
कान्हा हमार प्रण को, निभाते जइयो रे
निभाते जइयो श्यामा, निभाते जइयो । टेक।

और तो हमको कुछ ना चाहिए
पल पल में ऽ ऽ दरस तो दिखाइयो रे ॥१॥ प्रण

ना मांगू धन और, ना सोना चांदी
तुम्हारे ही धुन में ऽ ऽ दिन रात मैं बिताऊँ रे ॥२॥ प्रण

समझेना और हमको, तेरी पूजा अर्चा
तोरीं ही सेवकाई ऽ ऽ हमको दीजियोरे ॥३॥ प्रण

में हूँ भूला भटका, कई जन्मोंका
गोते खाता हूँ यहाँ ऽ ऽ जिया तडपे रे ॥४॥ प्रण

बाँह पकड कर, मुझे तुम उबारो
बहा जा रहा हूँ यहाँ ऽ ऽ कृपा कींजियो रे ॥५॥ प्रण

जैरामदास कहे प्रीतम प्यारों मेरो
केवट बनके ऽ ऽ नैया पार लगाईयो रे ॥६॥

भजन क्र. ८४ चाल– सजना हमार मोटार कार

हमतो बिक गये प्रेम के बाजार में
प्रेम के बाजार में संतों के संग में । टेक ।

कीमत हमारी, धनी न दे पावे
चाहे कितना धन ऽ ऽ हमपर वे लुटावे रे ।।१।।

प्यारी न लगे हमे, किसीकी मोटार गाडी
भाये हमारे दिल को ऽ ऽ पैदल सवारी रे । २।।

खेती हमारी है, हरी के भजन की
उसी में हम ऽ ऽ अपनी जिन्दगी बिताये रे ।।३।।

कुछ भी ना लागे, पैसा और कोडी
मुफ्त में बांटे धन ऽ ऽ जो कोई मांगे रे ।।४।।

राम नाम बेच कर, धन जो कमावे
उसीने राम को ऽ ऽ बदनाम किया रे ।।५।।

हमको लेना है तो, प्रेम पैसा दे दो
फिर हमसे मन चाहा ऽ ऽ काम तुम करालो रे ।।५।।

निष्काम जो हुये, वोही मर्म पाय
जैरामदास कहे, प्रभु उसे मिले रे ।।७।।

भजन क्र. ८५ चाल– आपसे हमको बिछडे हुये

जब बडों का है बुरा हाल ।
छोटों की क्या सुधरे चाल ।।
झूठी बजावे नितदिन गाल धर्म नीतिका नही है ख्याल ।धृ।
नीति नही है उनके मन में, ध्यान रखे वो नित पर धन मे ।
भाव नही है सत कर्मो में तथ्य नही है उनकी जुबामें ।।
दुसरों का क्या करे उद्धार अनीति की है उनकी चाल ।.१।।

उमर बिताई बुरे व्यसन में, बाल पकाये झूठे कामोंमे ।
दया नही है इसके दिलमें, शांति न पाई किसी जगहमे ।
शैतान जैसा भटकता रहे सिरपर नाचे उसके काल ।।२।।

बंदर जैसा स्वभाव इसका, यहाँ से वहाँ वो है कूदता ।
ठहर न पाये एक ठिकाने, आनंद मानें भटकने मे ।
समय नही है भजन करने होशियार बनकर फैलावे जाल ।।३।।

जैराम कहे ऐसे भूखोंको, पहले इनके मुंह पर थूको ।
हरदम इनको दूर ही रखो, बुराई बिन ना भलाई किसीकी
हर वक्त होशियार रहो, फसोंगे इनकी झूठी चाल ।।४।।

भजन क्र ८६ चाल- मत भूल अरे इन्सान

कोई चाहे तेरा कल्याण हो जा उसपे तू कुर्बान
इस मे है तेरी शान, इन बातों पर दे थोडा ध्यान । टेक ।

सब कुछ उसको ही तू समझले
उसकी पीर को हरदम तू जानले
धैर्य देकर उसे ऽ ऽ लगाले गले
उसको कहा सच्चा इन्सान ।।१।।

तुने जब यहाँ पर नेकी किया
प्रभु बहायेगा तेरें लिए नदियाँ
सच समझले उसे ऽ ऽ छोड झूठी बाते
सुखी होगा तेरा रे जीवन ।।२।।

दिलवर को तू अपना दिल दे दे
पूरी करले रें अपनी सारी मुरादे

संगत नही छोड ऽ ऽ निभाले वादा
प्रेम के भूखे है भगवान ॥३॥

पापी मतलबी लोगों से बचके तू चल
उससे अपना व्यवहार दूर से ही कर
कब वह लादेगा ऽ ऽ तुझपर तुफान
इसपर रख थोडा तू रे ध्यान ॥४॥

कर्म भूमि पर जब हम आये यहाँ
काम क्रोध रुपी रीछ भालू जहाँ-तहाँ
सोच समझ के ऽ ऽ पग तू रे धर
समझाये तुझे जेंराम ॥५॥

भजन क्र ८७ चाल– मत भूल अरे इन्सान

सच्चाई को तू रख इन्सान
कहना मेरा तू मान, होगी विजय ये जान
देखे सच झूठ को भगवान । टेक ।

तेरी हर बात उससे ना छुपी यहाँ
हर घट की बाते वो तो समझ रहा
चालाकी तेरी ऽ ऽ नही चलने वाली
किस गर्व मे भूला नादान ॥१॥

जिसने तुझको यहाँ पर जन्म दिया
खिला पिला के तुझको रे बडा किया
माता के गर्भ में ऽ ऽ जब तू उल्टा टँगा
किसने तोडा तेरा बन्धन ॥२॥

किसने दिया था तुझको रे वहाँ पर साथ
नही थे तेरे जब मुंह पाँव और हाथ
किसने पालन किया किसने दुध दिया
हो गया तू तो रे बेईमान ॥३॥

देख के ये जग तू भूल गया
मैं तू पने में सारा रे जीवन खोया
आगे की सुध ले ऽ ऽ राह झूठी तू छोड
तभी होगा तेरा कल्याण ॥४॥

ये नेकी करे तो नेक नाम मिले
बदी से चले तो बदनामी ले ले
कहता है जैंराम ऽ ऽ कर मन में विचार
अच्छे बुरे की करले पहिचान ॥५॥

भजन क्र. ८८ चाल– सुनरी पवन, पवन पुरवैया

सुनरे छलिया ऽ ऽ मचाये खलबलिया
कैसा यहां पर फैलाया रवैया,
देखे ना तू बुराईयाँ । टेक ।

मन में विचार भरे तेरे दुर्गुण के
भटकते तू फिरता है अन्धा बनके
बोलता है तू – हरदम झूठा, लबलब तू मती तेरी
मारी गई, सब छोडी नीतियां ॥१॥

सताते रहते हो तुम जीवों को
किसी की ना दया आवे कभी तुमको

मन है गंदा, होवें शरमिन्दा, कैसी सच्ची सीह रुचे
तुम्हारे ये दिलको तुम तो हो निर्दयी ॥२॥

हैवान जैसा व्यवहार तुम करते हो
नेकी बदी का विचार ना करते हो
कामक्रोध-वश में तुम होकर, बन्दर जैसा नाचते
हो रे गली गलीयों मे रे
एसी है तेरी बतियाँ ॥३॥

कबतक चलेगी तेरी मनमानी
एक दिन ढल जायेगी ये जवानी
कहे जैराम, ओ मुरख तू सुनले
बुढापे मे रोयेगा, कहे क्या पाप किया
बुरी होगी गतियाँ ॥४॥

भजन क्र ८९ चाल– शहीदोके खूं का असर देख लेना

इस देश में रहने वालों ऐ भाई
फुकट न खावो यहाँ की कमाई । टेक ।

किसीका ना भला यहाँ पर होगा
भोगना पडेगा नतीजा इसीका
काम धन्दा लेकर अपनालो मिताई ॥१॥

गुजारा करलो तुम अपने ही बलपर
हरदम ही चलते रहो सत के पथ पर
इसमे ही है रे तुम्हारी भलाई ॥२॥

कन्ध से कन्धा मिलाकर के चलना
वादे को अपने निभाते ही रहना
भूलो ना कभी वो पीर पराई ॥३॥

निठल्ले लोफरों से बचकर के चलना
अच्छा सबक देके मजा चखाना
कभी ना करना सज्जनों की बुराई ।।४।।

कहता है जैराम कर्म पहिचानो
इसमें भरा है हित सच्चा जानो
भूलो न बाते जो तुमको बताई ।।५।।

भजन क्र ९० चाल– तेरा प्यारा है नाम

मेरा प्यारा वतन, मेरा प्यारा वतन
इसके लिए लगाऊं मैं सारा तन मन, धन । टेक।

दुश्मन ने डाली कभी इसपर नजर
दिल जान से हम लेंगे उनकी खबर
लडते लडते हो जायेंगे कुर्बान ।।१।।

निगरानी करना ये फर्ज हमारा
पहरा देना यही मजहब हमारा
स्वाभिमान से जीना हमारी है शान ।।२।।

नसनस में भर देगे वीरता का खून
बूढे से जवान तक को यही देगे गुण
आयेगा संकट तो हम हो जायेंगे बलिदान ।।३।।

अपनायेंगे सत्य नीति होगी हमारी प्रगति,
बन्धुत्व भावना से जोडेंगे प्रीति
मानव धर्म का सिखायेंगे ज्ञान ।।४।।

मातृ भूमि पर जिसका सच्चा प्रेम है
मरमिट जाने पर वो अमर रहे
कहता जैराम उसका रहेगा नाम ।।५।।

भजन क्र ९१ चाल– जागिये रघुनाथ कुँवर

आइये प्रभु मन मन्दिर में
विनती सुन लीजिए । धृ ।

दिलका परदा खोल दियो
षड्रिपु को फेंक दियो
क्या कम है हमरे में, हमे तो बताइये ॥१॥

शुद्ध मनके फूल जमाये
भाव भक्ति चावल लाये
सुविचार गन्धको, त्रिगुण थाली में सजाये ॥२॥

पंच प्राण ज्योति जलाऊँ
ज्ञान, धूप सुगन्ध लाऊँ
अबतो प्रभु पधारिये, मुझे ना बिसारिये ॥३॥

प्रेम अश्रु नीर लाया,
हृदय कमल आसन बिछाया
मन कामना, जयराम को,
पूर्ण तो कीजिए ॥४॥

भजन क्र ९२ चाल– कहा मानो भारत वासियों

जब आई काम करन की बात यहाँ
फिर समय हमारे पास कहाँ । धृ ।

मतलबी जब रहे मन में भावना, जम जम करके बैठके रहना
खाना पीना और मौज उडाना, इसदम झूठी दिलासा देना
जब पैसा खर्च का समय आया
तो मुह छुपाये जहाँ तहाँ ॥१॥

फुकट का माने दूसरों का धन, गढाके अपना वहाँपर मन ।
लूटना चाहे मन ही मन । आलस्य में रहे सदा मगन ॥
सच झूठका विचार ना करे, खोई है अकल तेरी कहां ॥२॥

इनेको
अपने परसे तुम पराया देखो भावना अपनी शुद्ध रखो
सच्चे काम से होवे ना दुःख । सेवा का रखो हरदम फरव ।
इस मे ही भलाई है सबकी, बिरलाही इस नीति से रहा ॥३॥

ऐसी मतलबी है ये दुनिया, आवो न तुम इनकी दुनियां गलियां
नही तो भोगनी पडेगी आपत्तियाँ, सोच समझकर करो इनसे बतियां
जैराम कहे इन ठगोंसे, तुम बचके चलो जी भैया ॥४॥

भजन क्र. ९३ चाल- मेरे मन की गंगा और तेरे मनकी जमुना

सच्चे मन को जँचे, लगे प्यारी उनकी बाते
देश काम में आते वोही, धर्म निभाते । टंक ।

उनके ही पुण्य प्रताप से चलता देशका कार्य यहाँ सारा
उनसे ही टिक रहा यहाँ पर, मानव धर्म ये हमारा
सब जीवों को शान्ति मिले, सुनकरके बाते ॥१॥

भेदभाव ना इनके मनमे, सबको अपनाही माने
भलाई होवे हर प्राणि की, तत्पर रहके निभाते
एक दुसरे मे प्रीति जगावे, ऐसा सबक सिखाते ॥२॥

फूट की दरारे जहाँ पडी हो, एकता उनमे दर्शाये
मिल जुल करके, कैसे रहना, अमल मे नीति वो लावे
कंधे से ये कंधा जुडादे अपना कदम बढाते ॥३॥

जैरामदास कहे सुनो भाई, नेक काम है उनके पास
चिढ़ है इनको झूठे कर्म की, थोडी नही इन्हे बरदास्त
परहित को ये अपना समझे, आनन्द उसमे मनाते ।।४।।

भजन क्र. ९४ चाल– सुख के सब साथी

तेरी यह माया, नही कोई जाने
हे राम, घनःश्याम, तेरा तूही जाने, हम है नादान । धृ ।

तेरे भरोसे पलती दुनिया
इस नैयाका तूरे खिवैया
फिर क्यों तूने भेद रखा है ऽ ऽ २
कर सबका कल्याण ।।१।।

तुमने ही हमको जीवन दिया
पालन पोषण का बोझ उठाया
अब क्यों करता आनाकानी ऽ ऽ २
तरस रहे कणकण ।।२।।

यहाँ दर दरपे ठोकर खाते
रहे नैनोंसे नीर बहाते
आवे नही क्या थोडी दया ऽ ऽ
कैसा किया भगवान ।।३।।

दया का सागर नाम तुम्हारा
क्यों न देते हमको सहारा
जैराम कहे विनती सुनले
दे मेरी बात पर ध्यान ।।४।।

भजन क्र. ९५ चाल– सुख के सब साथी

मुझसे ऽ ऽ बोल कान्हा ऽ भद ना छुपाना
हमने ऽ ऽ तेरा ऽ ऽ कहना कब ना माना
बोल मेरे श्यामा । धृ ।

हम तो तेरे दरपर खडे
कबसे तेरी राह निहारे
कैसी न सुने पुकार हमारी ऽ ऽ २
कौन बसे तुम धाम ॥ १ ॥

दया माया क्यों भूल गये हो
अब बहाने क्यों करते हो
क्यों न हमारी फिकर तुमको ऽ ऽ २
करना है क्या बदनाम ॥ २ ॥

भटकता फिरता पाने तुमको
जगल, दरिया, तीर्थ धामको
मंदिर में भी नही मिल पाये ऽ ऽ २
हो गया मैं हैरान ॥ ३ ॥

तरस, तरस कर चुप रह जावूं
अपनी बाते किसको बतावूं
समझावूं किसको तेरे बिना ऽ ऽ २
तूही बता दे राम ॥ ४ ॥

कबतक बैठू तेरे भरोसे
आशाओं के तार टूटे
धीरज सब मेरे मनके छूटें ऽ ऽ २
दर्शन दे दो जैंराम ॥ ५ ॥

भजन क्र ९६ चाल- ऐसा है नाम तेरा

सत्य है जिसकी बानी, ज्ञानी हो या अज्ञानी
सबकी रखे निगरानी, उसमे ही है इन्सानी । टेक ।

वो ही है प्यारा जगका, उजियारा सब जीवों का
घिसता रहे वो तन को, मन में ना अभिमानी ।। १ ।।

ऊँचे भाव दिल में रखकर, दुःखियों के दुःख देखकर
उसके मन को होवे ग्लानि, नैनो से आये पानी ।। २ ।।

शील नम्रता से बोले, नीति नियम से वो चले
प्रेम नाता वो निभावे, सबकी पीर उसने जानी ।। ३ ।।

राष्ट्रहित उसकी भक्ति इसमें ही पाये शान्ति
देश धर्म के लिए कर दे अपनी वो कुर्बानी ।। ४ ।।

कहता है जैरामदास, सत् पर रखे विश्वास
वचनों को नही बदले, येही उसकी है निशानी ।। ५ ।।

भजन क्र ९७ चाल- मार दिया जाय या छोड दिया जाय

करना है तो करजा, भलाई का ये काम
रहेगा तेरा नाम मेरे यार जगमें
चलना है तो चलजा सत्य के धाम में । टेक । रहेगा

देख के चल तू नेकी बदी को, मिले सुख जहाँ पर सभीको
भाव दिलमें बिठा, सत् में हाथ बटा,
दीन गरीबों के लग जा सेवा मे ।। १ ।।

पुण्य नही पर-उपकार जैसा, उसमें मिले जीवन को दिलासा
पाया नर जन्म को, धरले सत् संगको

भला तेरा संतोकी बानी में ॥ २ ॥

मन ही तेरा है अच्छा और बुरा, जाये जिस ओर दिखे वैसा सारा
काबु करले इसको, फिर कर काम को
रह मत कभी तू दुविधामें ॥ ३ ॥

कहता है जैराम दो राहे, जाये जिस पथ पे वैसा ही पाये
सोच समझ के चल, फिर नही तुझे डर
इन बातों को रखले तू ध्यान में ॥ ४ ॥

भजन क्र ९८ चाल– रामचंद्र कह गये सिया से

सच्ची सेवा करे जो कोई, सत्युगी कहलायेगा
मरने पर भी अमर रहेगा, नाम काल नही खायेगा । टेक ।

अन्दर बाहर उजला मन का, द्वेश न रखे जीवों का
खुद पर से ही सबको जाने, तैयार रहे परहित करने
हर क्षण क्षण में साहस धरकर, संकटसे टकरायेगा । १॥

तन, मन, धन को न्योछावर करके, समाज सेवा दिलमें ले
परख परख कर कदम वो रखे, सत् को ही हरदम देखे
निष्काम भावना दिलमे धरकर, समाज सेवक कहायेगा ।२।

लेके सहारा नेक नीति का, नाता निभावे प्रीति का
ज्ञान बोध की रश्मि देकर, मिटाये अज्ञान पल भरमें
वही सपूत है मातृ भूमिका, राष्ट्रहित को समझेगा ॥३॥

इन बातों को जो नर समझे, पुरी करे वो मुरादे
भूलो ना तुम अपने वादे, नही तो पडोगे यम फन्दे
जेंरामदास कहे ये वक्त, बार बार नही आयेगा ।।४।।

भजन क्र. ९९ चाल– कुणा सांगावी कर्म कहाणी

जब तू मातृ भूमिका है प्यारा,
करदे अर्पण तन, मन सारा ।धृ।

मेरा नही है सब है ईश्वरका !
दास हुँ मै सब जीवोंका !!
पक्का भाव तू करले रे मन ऽऽ का, लग जायेगी नांव किनारा ।१

आये संकट देश धर्मपर
सह ले तू अपने कंधों पर !!
जिम्मेदारी तू अपनी समझले तभी होगा तू देश सितारा ।।२।।

जहाँ करनी है जान की कुर्बानी
वहाँ रखना तू अटल बानी
कदम न हिचके तेरे पल ऽऽ भर, लेते जा भगवान का सहारा ।३।

हिम्मत ना हारे न बिसरे नाम
इसमे ही तेरा है मोक्षधाम
दास जेंराम को दिल से भाया, वोहीं है मेरा प्राणोंसे प्यारा।४।

भजन क्र. १०० चाल– आने से उनके आये बहार

आखिर तुम्हारे ये लगते है कौन साथ तुम्हारे आएँगे कौन
बडे नासमझ हो तुम सुनलो रे भाई ।।
झूठ मूठ की बाते कहकर, गरीबों को तूने रे फँसाया

सारी उमर बिताकर अपनी, महलों को तूने रे बनाया
क्या आए क्या पाए इसे ना लेकरके तुम जावोगे भाई ।।१।।

अपने बच्चों के खातिर तूने धन को खुब लुटाया
सोने के गहनों से तूने अपनी औरत को सजाया
क्या तेरे हैं सारे, गफलत में पडोना तुम समझो ये भाई । २।।

जैरामदास कहता मेरा मेरा ये कहना तू छोड दे ।
माया का खेल ये सब इसमे भ्रमण लगाना छोड दे ।।
जन इनसे छूटना है हरीका तू स्मरण कर, सुनले ये भाई ।३।

भजन क्र. १०१ चाल– मैं तो गिरिधर में रंग जाऊँ

मैं तो अपनी गाडी चलाऊँ,
यम नियमों के रेल पथ पर, गाडी को पहुचाऊँ । टेक ।

सत्य अहिंसा ब्रम्हचर्य, और अस्तेय पालन करलूं,
अपरिग्रह से पवित्र बनकर, चित्त शुद्ध कर लेऊँ ।।१।।

शान्ति और संतोष मनाकर ईश्वर चिंतन कर लूं
वेद पठन की घंटी बजगई, तप जप झंडी दिखाऊँ ।।२।।

आसन का जब स्टेशन आया, नाडीं शुद्ध कर लेऊँ
नाक पकडकर प्राणायाम को शुद्ध कराने बैंठू ।।३।।

रेचक पुरक कुंभक करके, प्रत्याहार को पहूचूं
विषयांतर्मूख बनने बनते एक चित्त कर लेऊँ ।।४।।

ध्यान धारणा स्टेशन आए, ध्यान मग्न मैं होऊँ
ह्रदय पद्म पर मनस्थिर करके एक वृति बन जाऊ ।।५।।

अष्ट सिद्धिके आगे बढकर सहस्त्र दल पर पहुंचूं
जैरामदास को लगे समाधि गाडी वही रुकाऊं ।।६।।

भजन क्र १०२ चाल– अगर ईश्वर पाना है

जन्म मरण से छूटना है, समझले खुद को तू पहले । टेक ।

चमडे की गठडी है क्या तू, हाड मास का पिंजरा क्या तू
पंचतत्वो से निराला है तू, समझना इसको तू सीखले ॥१॥

कई जन्मो से तू घुमता है, कई देहो में घुमता है ।
चराचर मे भी निराला है, समझना इसको, तू सिखले ॥२॥

बतादे जन्म कब पायी, बतादे मृत्यु कब पायी
नित्य अविनाशी तूरे है, नही तू मरने वाला है ॥३॥

यदि तुझे काटनें जावे, नही तूं कटने वाला है ।
घुलाया जाये तुझे तो भी, नही तू घुलने वाला ॥४॥

सुखाया जाय तुझे तो भी, नही तू सुखने वाला है
जलाया जाय तुझे तो भी नही तू जॅलनें वाला हैं ॥५॥

समझता खुद को क्यों गंदा, गंदगीसे मतलब ही क्या
सनातन निर्गुण, शुद्धात्मा, जिसे ब्रम्हास्मि कहलाते है ॥६॥

कहे जैराम सुन भाई, अहं ब्रम्हास्मि कहलो दे
समझना खुदको तू चाहता, तो संतन का संग तू धरले । ७ ।

भजन क्र १०३ चाल– अगर तुझे ईश्वर पाना है

अगर तुझे प्रेम करना हैं, प्रभु से प्रेम करते जा । टेक ।

लगाता प्रेम क्यों तन से, लगाता प्रेम क्यों धन से,
ये दोनों झूठी माया है, सत्य सें प्रेम करते जा । १ ।

छोड दे प्रेम कंचन से, छोड दे प्रेम कामिनी से
इस बंधन से छुटना है तो प्रेम आत्मा से करते जा । २ ।

भलाई देश की चाहता, भलाई विश्व कीं चाहता
प्रभु है सब चराचर में सभी से प्रेम करते जा । ३ ।

तेरा धर्म कुछ भी हो न छोडो धर्म तुम अपना
भलाई धर्म की चाहता, धर्म से प्रेम करते जा ।।४।।

पूछा जब संभाजी से ये, धर्म या मृत्यु क्या होना
मृत्यु को उसने अपनाया, मृत्यु से प्रेम करते जा ।।५।।

कहे जैंराम सुन भाई प्रभु का प्रेम एक रुप है
यदि प्रभु को मिलाना है प्रभु से प्रेंम करते जा ।।६।।

भजन क्र १०४ चालॅ– कन्हैंयों तेंरीं मुरलीं बैरन भयी

चली रे मेरी सुरता गगन को चली
पिया मिलन को बावरी । धृं ।

नव तारका बाजा मेरा, अनोखा नाद सुनाये
एक, एक तारकी धुन निराली, बिरलाहीं सुनपाये
शोवत, जागत, रुकेना पलभर सोहं उसकी बोली ।।१।।

हंसा उडे एक्कीस स्वर्ग के उपर बेगम तार पहुंचाये
अनहद की धुन कानपर आये, ढोल मजिरा सुनाये
सुधबुध सारी भुल गया मै अजब छबी निरालीं ।।२।।

शब्द, शब्द से अलख जगाया, आत्म तत्वों को पाया
जो, जो पग आगे बढाया, आनंद के गीत गाया
शून्य शिखर पर हंसा जाये, ज्योत में ज्योत मिली ।।३।।

जैरामदास कहे इस पद को बिरले नें हीं पाया
जो होगा इस घरका ज्ञानीं, उसने ही आजमाया
निज स्वरुप की परख सुंदर परम् पद की बोली ।।४।।

भजन क्र १०५ चाल– मेरा नाम है चमेली

दोहा– सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गणेश
पांच देव रक्षा करे, ब्रम्हा विष्णु महेश

जय दुर्गे अंबेमाता, भक्तों को दे तू दिलासा
बैंठा हूँ लेकर के आशा, तेरे दरपे
अवतार लिये जग तारन, पृथ्वी का भार उतारण
असुरों का करने दमन, बैंठी शेर पे ।। घृ ।।

घूसखोरी और गुंडा गर्दी, बढ रही जहाँ तहाँ
कुचली जा रही ईमानदारी, सच्चा रो रहा मैंय्या
हो ऽ ऽ देर ना लगा आने को तू ऽ ऽ
त्राही, त्राही हो गई जनता
दौडके आ संकट पे ।। १ ।।

तेरे भोले भोले बालक, देखे जैंसे चातक
खिसक रहा है धैंर्यं इनका, कैंसे सहे ये पातक
हो ऽ ऽ तू ही बता दे अब मैंय्या ऽ ऽ
माँ बिन पुत्र कैंसा जिये
वैंसा हाल यहाँ पे ।। २।।

कितनी देर रही आने की, तुम बिन प्यासी अखियाँ
मनकी मुरादे पूरी कर दे, आके बढा दे बैंया
हो ऽ ऽ और ना तुझ से कुछ मांगू ऽ ऽ
सुख शांति का वरदान दे दे
चले सत् के पथ पे ।। ३ ।।

विघ्न हरिणी नाम तुम्हारा, सबकी रक्षा कीन्ही
धर्म बचाकर असुर संहारे, ऐंसी बेद बानी
हो ऽ ऽ जैंरामदास की प्रार्थना ये ऽ ऽ
अन्यायोंका खात्मा करके
कृपा कर तू हम पे ॥ ४ ॥

भजन क्र १०६ तर्ज– सच्चे सेवक बनेंगे हम

भारत की आजादी की
साकार कर दिखलाएँगे
अरे तमन्ना पूरी करके
सच्चे सपूत कहलायेंगे ॥ धृ ॥

लडते रहेंगे हम तब तक
जब तक रहेगा तन में प्राण
कितनी भी कठिनाई आए
चाहे हो जाएँ हम कुर्बान
हारेंगे न हिम्मत कभी
प्रण को निभाते जाएँगे ॥ १ ॥

संत विचार को हृदय में धरकर
हर एक कदम बढाएँगें
राहों मे आई मुश्किल को
हल करके दिखलाएँगे
सदाचार और नम्रता की
झांकी सब में भर देंगे ॥ २ ॥

कितना भी कठोर हो कोई
उसका ह्रदय बदल देंगे
सच्चाई का ज्ञान देकर
इन्सान बनाकर छोडेंगे
नीति के इस पथ पर चलकर
प्रीति उन्हे सिखाएँगे ॥ ३ ॥

छोटे न रहेंगे बुद्धि से हम
बलधारी रहे अर्जुन सम
कायर न रहे रावण जैसे
प्रीत न करे हम पर धन से
काल भी खडा हो राहों पर
हम उससे टकरा लेंगे ॥ ४ ॥

जैरामदास कहे वचन का
प्रण पूरा निभाएँगे
एक ही नारा रोमरोम में
सत्य अहिंसा बसाएँगे
एकता से ही नेक बनाकर
विजय करके दिखाएँगे ॥ ५ ॥

भजन क्र १०७ चाल– झूठ बोले कौवा काटे

सत्य छोडे झूठ पकडे, ऐसे लोगों से बचियो ।
वे बहकी बाते करते, इनसे प्रीत ना करियो ॥
बिन पेंदी के लोटे जैसा, इधर उधर वे लुढ़कते है ।
वक्त पडे तो दूर ही जाते, अपनी गलती छूपाते है ॥

अपना पाप छुपाकरके वे, सबसे न्यारे रहते है।
सबसे न्यारे रहकरके वे, भोलेजन को फँसाते है ॥
लाज शरम ना तनिक है इनको, इनसे बचकर तुम चलियो ।१।

मीठी मीठी बाते करते, चाले इनकी न्यारी है।
तथ्य नही जुबां में इनके, दिल में भरी गद्दारी है।
सबको फँसाना धंदा इनका, कर्मो में मक्कारी है।
कर्मो मे मक्कारी इससे, फैली ये बेकारी है!
फैल रहा व्यभिचार इनसे, ऐसी संगत से बचियो ॥२॥

फूटकी दरारे दीख रही है, इन्ही लफंगे लोगों से
समाज पतन पर जा रहा है, इनके ही पापों से।
ईर्ष्या की लेहराती लहैरे, इनके ही विचारों से।
छुआ छूत का भेद बना है, इन बेइमान दलालोंसे।
अपना उल्लू सिधा करते, इनसे टकराते रहियो ॥३॥

रामदास कहे वो प्यारा, सबकी भलाई जो चाहे।
आप तरे औरों को तारे, समता सबको दर्शाये।
कुटिल भाव ना मन मे उनके एक ही देखे आत्मायें।
प्रेम लेवे और प्रेम देवे जनता काजो हित चाहे।
अटल सिद्धांत है जिस नरके, उनके पथपर तुम चलियो ।४।

भजन क्र. १०८ चाल– ऊँचे भावको दिलमे रखकर

कदर होती है दुनिया मे रे
आज पैसे वालों की
कुट नीति वालों की और
गुंडा चाल बाजों की ।धृ॥

कितना भी मति भ्रष्ट हो, उसकाही बोलबाला है
चाहे जैसा वो करता है बाते उसकी सच होती है
गरीब चले ईमान के पथपर' कदर ना उसके कामों की ।१।

इनके ही पापोंसे दुनियामे, हो रहा हाहाःकार
जहाँ वहाँ है युद्ध फैला, सच्चा हो गया बेजार
भडक रही आग विश्वमे, बाते करते हिंसाकी ।२।

छायी चिंता सबके दिलमे, अशांति सबमे भर रही
अपने पेट की फिकर समीको, इर्ष्या सबमे जाग रही
सद्भावना भूल चले रे, फिक्र पडी है पेट की ।३।

ऐसाही तमाशा जब चलता है, हानि होगी जीवोंकी
मार काट से कई नदियाँ, बह जायेगी खूनकी
उसको कोई रोक न पाये. वक्त आये नाश की ।४।

मंडरा रही है विष की लहरे, विषमता भाव मनमे धरे
मानव आज दानव बनके, पाखंडीं का काम करे
जेरामदास कहे सुन भाई सत्को लेकर जो चले
करे काम ईमानदारीं से, नाम को अपने अमर करे
इस मार्ग के विरुद्ध चले जो, आशा न रखे जीनेकीं ।५।

भजन क्र १०९ तर्ज- ऊँचे भाव को दिल मे रखकर

मानव की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा कहलाती है
उसके लिये जो घिसते रहता वही आनंद पाता है
इस युग का यही है कहना
सब मिल जुल, बाँट कर खाना

धन का संग्रह पास में हो तो
दुखियों के खातिर उसे खरचना;
ऐसे भाव हृदय में जिसके, सबका प्रिय बन जाता है ॥१॥
हर जीवों की सुधि रखकर
सुख दुख उनके सुनता है
जिसको जिसकी पडे जरुरत
देने की कोशिश करता है
प्रेम रखे ऐसा जो सबसे, दाता वही कहाता है ॥२॥
वक्त घडी का ज्ञान सहारा
समझता है जो पूरा पूरा
कब क्या करना है यह जाने
वैसा ही रास्ता अपनाता !
उसे ही समाज सेवक कहाते, वही शांति दे सकता है ॥३॥
जैरामदास कहे सुन भाई
कल करता सो आज कर
गया काल तो फिर ना आए
फिर रोने से क्या मतलब
सेवा में ही राम को पाले, वही धर्म, मानव तेरा ॥४॥

भजन क्र. ११० तर्ज– मुल स्वभाव बदल नही सकता

स्वाभिमान से जो जीता है
वही ईमानदार सच्चा है रे
एक एक पल अपना
कभि न व्यर्थ खोता है रे ॥धृ॥
इस जड तन की फिक्र ना उसे
प्रीत करे वो आत्मा से

नही डरा सकती है उसको
मौत राह में आकर के
चिंता को जिसने ठुकराया
उसका ही प्रभु से नाता है रे ॥ १ ॥

सब जीवों से प्रेम वो करता,
कभी कपट ना दिल में धरता
ऊँच नीच को नही मानता
समता के गुण दिल में धरता
ना वो किसी से बैंर करता
वह धर्म नीति को पाता है रे ॥२॥

पर दुख को अपना दुख समझे
पर सुख को अपना सुख समझे
पर नारी को माता माने
पर धन को वह पत्थर समझे
जिसका है ऐसा व्यवहार
वही ज्ञान की है तलवार
वही प्रेम भाव निभाता है ॥ ३ ॥

कहे जैंराम मिलना मिलाना
इस नीति को अमल में लाना
सत् पर पग धरते चलना
सरल नही है प्रण को निभाना
आसान नही भक्ति करना
लोहे के चने चबाना
बिरला हीं उसे पाता है रे ॥ ४ ॥